



आशा सुक्तंधा

नवम्बर 2022



पठनीय एवं



श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

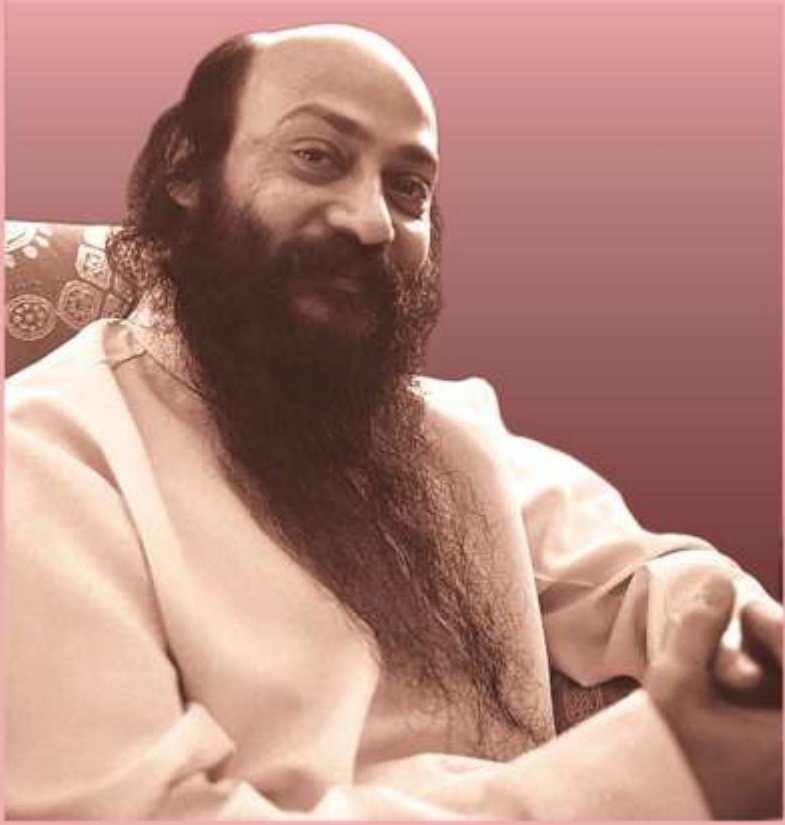


★ जीवन के प्रति अहोभाव

★ दुख को सुख बनाने की तिब्बती विधि

★ शिकायत नहीं, अनुग्रह से भरो

★ अहा, जीवन कितना प्यारा!



ओशो सुगंधा

वर्ष-1/अंक-11

नवम्बर 2022



पठनीय एवं



श्रवणीय मासिक ई-पत्रिका

परमगुरु ओशो के घरणों में समर्पित

प्रेरणास्रोत

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती एवं माँ अमृत प्रिया

संपादन एवं संकलन

माँ मोक्ष संगीता

अन्य सहयोग

मस्तो बाबा

कला एवं साज सज्जा

आनंद संदेश



contact@oshofragrance.org

ओशो सुगंधा

पठनीय एवं श्रवणीय
मासिक ई-पत्रिका की विशेषताएं

यह एक जीवंत पत्रिका है
नीचे दर्शाए गए चिह्न इस पत्रिका में
आपको विभिन्न जगह मिलेंगे, जिनके
स्पर्श मात्र से सक्रिय हो जाएंगे



ऑडियो

इस बटन को स्पर्श करते ही
आप संगीत का ऑडियो सुन
अथवा डाउनलोड कर सकते हैं



वीडियो

इस बटन को स्पर्श करते ही
आप वह वीडियो देख सकते हैं



व्हाट्स
ऐप

इस बटन को स्पर्श करते ही
आप व्हाट्स ऐप पर सम्बंधित
व्यक्ति को संदेश भेज सकते हैं



गुगल
मैप

इस बटन को स्पर्श करते ही
आपके फ़ोन पर उस जगह का
गुगल मैप खुल जाएगा



पुस्तक

इस बटन को स्पर्श करते ही
आप PDF में पढ़ अथवा
डाउनलोड कर सकते हैं



वेब
साइट

इस बटन को स्पर्श करते ही
आप सीधे उस वेब साइट
पर जा सकते हैं



क्वोरा

इस बटन को स्पर्श करते ही
आप सीधे हिंदी में क्वोरा
पर पढ़ सकते हैं

अनुक्रम

1. जीवन के प्रति अहोभाव	05
2. शिकायत नहीं, अनुग्रह से भरो	06
3. दुख को सुख बनाने की तिब्बती विधि	09
4. अहा, जीवन कितना प्यारा!	12
5. भक्ति संबंधी ओशो साहित्य	19
6. शिकायती मनोवृत्ति : कितनी जहरीली!	20
7. Hara Meditation	21
8. Insight into sanyas name	22
9. तीन वृक्षों की कहानी	23
10. क्वोरा लिंक	25
11. चाह और शीघ्रता की बाधा	26
12. स्वस्थ रहें, मस्त रहें	32
13. सुगम है हल!	33
14. हंस दो जरा	34
15. मा जी एवं स्वामी शैलेन्द्र जी के वीडियो	35
16. म्यूजिक एलबम – आओ पुकारें ओशो	36
17. विगत जन्म के दान का फल	37
18. आनंदित रहने के सरल उपाय	38
19. आगामी कार्यक्रम	40
20. जन्मोत्सव आमंत्रण	41
21. समाचार	42
22. संपर्क सूत्र	43
23. पूर्व के संस्करण	44



जीवन के सृजन में पहली बात है - जीवन के प्रति अहोभाव। जीवन के प्रति धन्यता का बोध, जीवन के प्रति आनंद की धारणा, जीवन के सौंदर्य और जीवन के रस के प्रति अनुग्रह, ग्रेटिच्युड।

जीवन के शत्रु जो हैं, उन्हें जीवन से कुछ भी नहीं मिलेगा। शत्रुता से कभी किसी को कुछ भी नहीं मिला है। जीवन के मित्र जो हैं, जीवन अपनी निधियों के द्वार केवल उनके लिए ही खोलता है जो प्रेम से जीवन के द्वार पर दस्तक देते हैं, जो प्रेम से जीवन को आलिंगन करने के लिए तत्पर होते हैं, जो प्रेम से जीवन के द्वार पर प्रार्थना करते हैं, जो प्रेम से जीवन को पुकारते हैं और बुलाते हैं। और जिनके हृदय में जीवन के विरोध में कोई कांटा नहीं होता है, जीवन के स्वागत के लिए फूलों की मालाएं होती हैं, केवल उनके लिए ही जीवन एक मंदिर बन पाता है।





अगर फूल दिखने लगे तो कांटे दिखाई नहीं पड़ते। अगर कांटे दिखाई भी पड़ जायें तो उन पर श्रद्धा नहीं आती। और अगर मानने को मजबूर ही होना पड़े कि कांटे हैं, तो भी तुम्हें यह दिखाई पड़ने में देर नहीं लगेगी कि कांटे फूलों की रक्षा के लिये हैं। वे फूलों की सेवा में रत हैं। वे फूलों के शत्रु नहीं हैं। वे फूलों के मित्र हैं। तभी तो एक ही पौधे पर दोनों लग सकते हैं। शत्रुता कैसे एक ही पौधे पर लगेगी? अगर कांटा उसी पौधे पर लगता है, उसी जड़ से रस पाता है जिससे फूल; तो किसी गहरे में दोनों के बीच मैत्री होनी चाहिए। किसी गहरे में दोनों के बीच एक संगीत का संबंध, एक लयबद्धता होनी चाहिए। अन्यथा यह असंभव है।

जहां-जहां तुम्हें विरोध दिखाई पड़ता है, उस विरोध के नीचे अगर तुम गौर करोगे, तो कहीं तुम्हें एकता उपलब्ध होगी। क्योंकि एक ही जीवन में दोनों कैसे लग सकते हैं? लेकिन जिस आदमी ने फूलों से अपने को भर लिया, उसका जीवन सुख से भर जायेगा। और जिस आदमी ने कांटों से अपने को भर लिया उसका जीवन दुख से भर जायेगा।

तुम्हें जब भी कुछ चुभता है, तब तुम समझते हो कोई तुम्हें चुभा रहा है, तुम भूल में हो। जब भी तुम्हें कुछ चुभता है, उसका अर्थ है कि तुम कांटे देखने में इतने कुशल हो गये हो कि हर चीज कांटा हो गई है, और हर चीज चुभती है।

एक सूफी फकीर औरत हुई राबिया। वह किसी में कुछ बुरा नहीं देखती थी। वही तो संत का लक्षण है! वह कांटे को भी देखती तो उसकी प्रशंसा में गीत ही उससे निकलता। उसके मित्र, उसके शिष्य और दूसरे फकीर बड़े परेशान थे। कैसी ही बुरी बात हो, उसमें कुछ न कुछ फूल का खिलना वह देख ही लेती थी। एक दिन एक फकीर हसन ने कहा कि राबिया, सब तरह की खबरें हम तेरे पास लाते हैं। तू कुछ न कुछ अच्छा देख लेती है। क्या तुझे शैतान में भी कुछ अच्छा दिखाई पड़ता है?

राबिया का चेहरा ऐसे प्रसन्नता से भर गया जैसे शैतान का नहीं, परमात्मा का नाम

लिया गया हो। और राबिया ने कहा, 'धन्यवाद शैतान का। क्योंकि न वह मेरी वासना को उकसाता और न मुझमें कभी संयम का जन्म होता। न वह मुझे चुनौती देता और न मैंने परमात्मा तक यात्रा की होती। धन्यवाद शैतान का! और यह तो हसन तुम्हें भी मानना पड़ेगा कि कुछ गुण शैतान में हैं, जो संतों में भी नहीं होते।'

हसन ने कहा, 'कौन से गुण? सुने नहीं कभी। किसी शास्त्र में लिखे नहीं।'

तो राबिया ने कहा, 'देखो असंभव में लगा है शैतान, परमात्मा को हराने में। इससे बड़ी असंभव बात क्या होगी? लेकिन हताश नहीं होता। तुम परमात्मा को पाने में लगे हो, जिससे सरल कोई बात नहीं हो सकती; फिर भी हार-हार जाते हो और हताश हो जाते हो। धैर्य तो मानना पड़ेगा शैतान का। सीखना हो तो उससे सीखना चाहिए। अनंतकाल से परमात्मा को हराने में लगा है, जो कि हो ही नहीं सकता। और तुम परमात्मा को पाने में लगे हो, जो कि होना ही चाहिए इसी क्षण! क्योंकि परमात्मा स्वभाव है; उसे पाने में क्या दिक्कत है? वह तुम्हारे भीतर छिपा है। एक कदम भी तो नहीं उठाना; बस, जरा आंख खोलनी है। और तुम उसमें भी हार जाते हो, थक जाते हो। और शैतान स्वभाव को हराने में लगा है जो हो ही नहीं सकता। क्योंकि अगर स्वभाव हार जाये, तो फिर जीतेगा क्या? स्वभाव का तो अर्थ है, जो शाश्वत नियम है। उसके विपरीत कुछ भी नहीं हो सकता। असंभव में लगा है। लेकिन उसका धैर्य, उसकी लगन, उसका श्रम, सीखने जैसा है।' राबिया ने कहा, 'मैं तो परमात्मा तक पहुंची शैतान से सीख-सीख कर। और जिस दिन मैंने परमात्मा को पाया, मैंने पहला धन्यवाद शैतान को दिया। उसके सहारे के बिना यह यात्रा नहीं हो सकती थी।'

तुम्हें परमात्मा भी मिल जाये तो तुम शिकायत लेकर खड़े हो जाओगे। तुम्हारे मन में फेहरिशत होगी शिकायतों की, कि अगर कभी परमात्मा मिल जाये तो यह पूरी फेहरिशत सामने रख देंगे। शायद इसी डर से वह तुम्हें मिलता भी नहीं।

मैंने सुना है, एक यहूदी कथा है कि एक आदमी बड़ी उबाने वाली बकवास करने का आदी था। साधु था, रबाई था, एक बड़े यहूदी मंदिर का पुरोहित था; मगर बड़ा उबानेवाला था। और उसकी बकवास से पूरा गांव परेशान था। एक सुबह, वर्ष के पवित्र दिन पर उसने उठकर अपनी पहली प्रार्थना में कहा कि 'हे परमात्मा, अब बहुत हो गया। आज तो तुझे मुझे मिलना ही होगा। हो गई प्रतीक्षा, हो गया श्रम, हो गई प्रार्थना! अब काफी हो गया।'

परमात्मा ने कहा, 'मेरे भाई, आज तो छुट्टी का दिन है। आज तो कम से कम तू मुझे क्षमा कर। आज तो मुझे भी विश्राम करने दे।'

तुम्हारे पास इतनी बड़ी फेहरिशत है शिकायतों की। कांटे ही कांटों की माला है तुम्हारे पास। अगर परमात्मा मिल जाये तो वही माला तुम उसके गले में पहनाओगे; शायद इसी डर से तुम्हें मिलता नहीं।

मैंने एक और कहानी सुनी है, एक जहाज यात्रा पर था। उसमें एक संत भी था और एक पापी भी यात्रा कर रहा था। और भी लोग यात्रा कर रहे थे। तूफान आया, जहाज अब डूबा तब डूबा की हालत हो गई। सारे लोग अपने घुटनों पर गिर गये और परमात्मा से प्रार्थना करने लगे। संत ने क्या किया? वह जहां पापी बैठा था एक कोने में घुटने टेक कर, वह जा कर उसके सामने खड़ा हो गया उसको छिपा कर। उसने कोई प्रार्थना तो नहीं की, उस पापी को छिपा कर खड़ा हो गया। उस पापी ने कहा, 'मेरे भाई, यह क्या कर रहे हो? हे परमात्मा, बचाओ!' उस संत ने कहा, 'धीरे बोल भाई! अगर उसे पता चल गया कि तू यहां है तो कोई नहीं बच सकता। मैं तुझे छिपा कर खड़ा हूँ।'

तुम जैसे हो, परमात्मा तुमसे छिप कर चलेगा। उसे पता भर चल जाये कि तुम कहां हो, वहां भर से वह विदा हो जाता है। और कहीं होता होगा, लेकिन तुम जहां हो, वहां नहीं होता। इसीलिए तो तुम्हें तीर्थयात्रायें करनी पड़ती हैं। कोई मक्का जाता है, कोई काशी जाता है, कोई गिरनार जाता है। क्यों? परमात्मा वहां नहीं है, जहां तुम हो? तुम्हारे डर की वजह से वह कहीं गिरनार में छिपा है, काशी में छिपा है, काबा में छिपा है। और तुम

इतनी भीड़ में वहां जा रहे हो कि इसको पक्का मानना कि वहां से कभी भाग चुका होगा।

जिसके हृदय में शिकायतें भरी हैं, और जिसने कांटों को चुना है, उससे परमात्मा का मेल नहीं हो सकता। प्रार्थना का क्या अर्थ है? शिकायत-शून्य हृदय! तुम चाहे चिल्लाओ मत छती फाड़-फाड़ कर परमात्मा का नाम, क्योंकि वह बहरा नहीं है। तुम्हारे हृदय में उठते धीमे से स्वर भी वह सुन लेगा। तुम्हारी श्वासों में बसी हुई भावना भी उसे पता चल जायेगी। तुम उससे क्या छिपा पाओगे? तुम्हारे चिल्लाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

प्रार्थना का नाम उसकी स्तुति नहीं; प्रार्थना का अर्थ है, शिकायत के भाव का अभाव।

लेकिन यह कब होगा? यह तब होगा, जब तुमने जीवन में फूल चुने हों। फूलों को चुननेवाला अहोभाव से भर जाता है। अनुग्रह, प्रार्थना है। अनुगृहीत होने की भावना प्रार्थना है। एक सतत कृतज्ञता, कि जो मिला है मुझ अपात्र को, वह जरूरत से ज्यादा है, असीम है। जो मुझे मिला है, वह उसका प्रसाद है, मेरी योग्यता नहीं। जो मैंने पाया है, वह जरूरत से ज्यादा है। यह तो अहोभाव है। अहोभाव प्रार्थना है।

लेकिन जो भी मुझे मिला है वह मेरी योग्यता से कम है, यह शिकायत है। और शिकायत का अर्थ है कि तुमने कांटे चुने। प्रार्थना का अर्थ है कि तुमने फूल चुने।

और जिंदगी में दोनों हैं। फूल भी हैं और कांटे भी हैं। सुख भी है, दुख भी है। अच्छ भी है, बुरा भी है। पापी भी हैं, पुण्यात्मा भी हैं। क्योंकि जीवन द्वंद्व से निर्मित है। दोनों हैं। इसलिए तुम्हारे सामने तीन विकल्प हैं। एक; दुख को चुनो और नर्क में रहो। दो; सुख को चुनो स्वर्ग में रहो। और तीन; दोनों को मत चुनो और सुख और दुख दोनों से मुक्त हो जाओ। वही परम अवस्था है। वही परमात्मा के साथ एक हो जाना है।

-ओशो, दीया तले अंधेरा-15



ओशो पंच महाव्रत
एवम्
महापरिनिर्वाण दिवस उत्सव

19-22 जनवरी 2023
19 सुबह से 22 दोपहर तक

स्थान:-
ओशो ध्यान मंदिर, बेनाड रोड़,
खोरा बीसल के पास,
चतरपुरा, जयपुर, राजस्थान

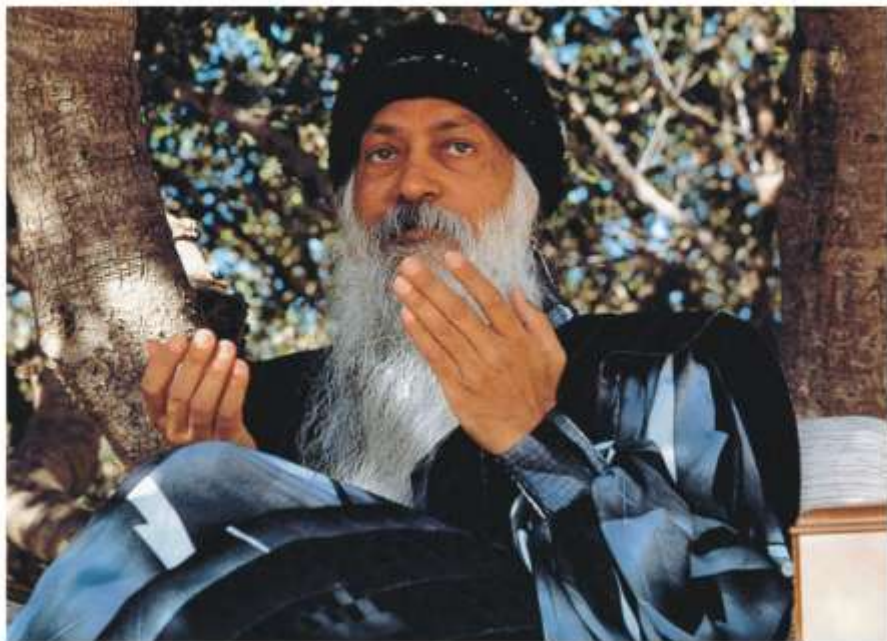
आवास शुल्क
डॉर्मेटरी - ₹2500, फ्लैट - ₹4500
डीलक्स कॉटेज - ₹6000

स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती मां अमृत प्रिया

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें -
8302371182, 7339852998

www.oshofragrance.org

oshofragrance



दुख को देखो। सुख को चाहो मत, दुख को देखो।

दो ही तरह के लोग हैं दुनिया में : सुख को चाहने वाले लोग, और दुख को देखने वाले लोग। जो सुख को चाहता है वह नये-नये दुख पैदा करता जाता है, क्योंकि हर सुख की आकांक्षा में नये दुख का जन्म है। और जो दुख को देखता है, दुख विसर्जित हो जाता है। और दुख के विसर्जन में सुख का आविरभाव है।

मैं फिर से दोहरा दूं : दो ही तरह के लोग हैं, और तुम्हारी मर्जी जिस तरह के लोग तुम्हें बनना हो बन जाना।

सुख को मांगो, दुख बढ़ता जाएगा। क्योंकि सुख मिलता ही नहीं, मांगने से मिलता ही नहीं; इसलिए दुख बढ़ता जाता है। फिर जितना दुख बढ़ता है, उतना ही तुम सुख की मांग करते हो--उतना ही ज्यादा दुख बढ़ता है। पड़े एक दुष्टचक्र में, जिसके बाहर आना मुश्किल हो जाएगा। इसी को तो ज्ञानियों ने संसार-चक्र कहा है--भवसागर! बड़ा सागर बनता जाता है, क्योंकि जैसे-जैसे तुम्हारा दुख बढ़ता है, तुम सोचते हो : और सुख की खोज करें। और सुख की खोज करते हो, और दुख बढ़ता है। अब इसका कहीं पारावार नहीं, इसका कोई अंत नहीं। भवसागर निर्मित हुआ।

दूसरे तरह के लोग हैं, जो दुख को देखते हैं। दुख है, ठीक है। इससे विपरीत की आकांक्षा करने से क्या सार है? इसे देख लें : यह कहां है, क्या है, कैसा है? दुख तथ्य है तो इसके प्रति जाग जाएं।

तुम इसका छोटा-मोटा प्रयोग करके देखो। जब भी तुम उदास हो, दुखी हो, बैठ जाओ शांत अपने कमरे में। रहो दुखी! वस्तुतः जितने दुखी हो सको उतने दुखी हो जाओ। अतिशयोक्ति करो।



तिब्बत में एक प्रयोग है : अतिशयोक्ति। ध्यान का गहरा प्रयोग है। वे कहते हैं, जिस चीज से तुम्हें छुटकारा पाना हो, उसकी अतिशयोक्ति करो, ताकि वह पूरे रूप में प्रगट हो जाये, ऐसा मंद-मंद न हो। तुम दुखी हो रहे हो, बंद कर लो द्वार-दरवाजे, बैठ जाओ बीच कमरे के और हो जाओ दुखी, जितने होना है। तड़फो, आह भरो, चीखो; लोटना-पोटना हो

जमीन पर, लोटो-पोटो; पीटना हो अपने को, पीटो—लेकिन दुख की अतिशयोक्ति करो। दुख को उसकी पूरी गरिमा में उठ दो, दुख की आग जला दो। और जब दुख की आग भभक कर जलने लगे, धू-धू करके जलने लगे, तब बीच में खड़े हो कर देखने लगे : क्या है, कैसा है दुख ? इस दुख के साक्षी हो जाओ।

तुम चकित हो जाओगे, तुम हैरान हो जाओगे कि तुम्हारे साक्षी बनते ही दुख दूर होने लगा; तुम्हारे और दुख के बीच फासला होने लगा, तुम साक्षी बनने लगे, फासला बड़ा होने लगा। तुम और भी साक्षी बनने लगे, फासला और बड़ा होने लगा। और जैसे-जैसे फासला बड़ा होने लगा, सुख की धुन आने लगी, सुख की सुवास आने लगी। क्योंकि दुख का दूर होना, यानी सुख का पास आना। धीरे-धीरे तुम पाओगे, दुख इतने दूर पहुंच गया कि अब समझ में भी नहीं आता कि है या नहीं; दूर तारों पर पहुंच गया और सुख की वीणा भीतर बजने लगी। फिर एक ऐसी घड़ी आती है, जब दुख चला ही गया। जब दुख चला जाता है, तो जो शेष रह जाता है, वही सुख है।

सुख तुम्हारा स्वभाव है। सुख, दुख के विपरीत नहीं है। तुम्हें सुख पाने के लिए दुख से लड़ना नहीं है। दुख का अभाव है सुख। दुख की अनुपस्थिति है सुख। दुख को तुम देख लो भर आंख—और दुख गया। यही करो तुम क्रोध के साथ। यही करो तुम लोभ के साथ। यही करो तुम चिंता के साथ। और सौ में से नब्बे मौकों पर तो शरीर के दुख के साथ भी तुम यही कर सकते हो।

अभी पश्चिम में बड़े मनोवैज्ञानिक प्रयोग चल रहे हैं, जिन्होंने इस बात की सच्चाई की गवाही दी है। सौ में निन्यानबे मौकों पर सिरदर्द केवल साक्षी-भाव से देखने से चला जाता है—निन्यानबे मौके पर। एक ही मौका

है जब कि शायद न जाए, क्योंकि उसका कारण शारीरिक हो, अन्यथा उसके कारण मानसिक होते हैं।

तुम्हें अब जब दुबारा सिरदर्द हो तो जल्दी से सेरिडॉन मत ले लेना, एस्प्रो मत ले लेना। अब की बार जब दुख हो तो ध्यान का प्रयोग करना, तुम चकित होओगे। यह तो प्रयोगात्मक है। यह तो अब वैज्ञानिक रूप से सिद्ध है, धार्मिक रूप से तो सदियों से सिद्ध रहा है, अब वैज्ञानिक रूप से सिद्ध है। जब तुम्हारे सिर में दर्द हो, तुम बैठ जाना। उस दर्द को खोजने की कोशिश करना : कहां है ठीक-ठीक ? ताकि तुम अंगुली रख सको, कहां है। पूरे सिर में मालूम होता है तो खोजने की कोशिश करना : कहां है ठीक-ठीक ? तुम चकित होओगे : जैसे तुम खोजते हो, दर्द सिकुड़ने लगता है, उसकी जगह छोटी होने लगती है। पहले लगता था पूरे सिर में है, अब लगता है एक थोड़ी-सी जगह में है। और खोजते जाना, और खोजते जाना, और खोजते जाना, देखते जाना भीतर--और जरा भी चेष्टा नहीं करना कि दुख न हो, दर्द न हो; है तो है, स्वीकार कर लेना। और तुम अचानक पाओगे, एक ऐसी घड़ी आएगी कि दर्द ऐसा रह जाएगा जैसे कि कोई सुई चुभो रहा है। इतने-से, छोटे-से बिंदु पर! और तब तुम हैरान होओगे कि कभी-कभी दर्द खो जाएगा। कभी-कभी लौट आएगा। कभी-कभी फिर खो जाएगा। कभी-कभी फिर लौट आएगा। और तब तुम्हें एक बात साफ हो जाएगी कि जब भी तुम्हारा साक्षी-भाव सधेगा, दर्द खो जाएगा। और जब भी साक्षी-भाव से तुम विचलित हो जाओगे, दर्द वापिस लौट आएगा। और अगर साक्षी-भाव ठीक सध गया तो दर्द बिलकुल चला जाएगा।

इसे तुम जरा प्रयोग करके देखो। मानसिक दुख तो निश्चित रूप से चले जाते हैं; शायद शारीरिक दुख न जाएं। अब किसी ने अगर सिर में पत्थर मार दिया हो तो उसके लिए मैं नहीं कह रहा हूं। इसलिए सौ में एक मौका छोड़ा है कि तुमने अपना सिर दीवाल से टकरा लिया हो, फिर दर्द हो रहा हो, तो वह दर्द शारीरिक है। उसका मन से कुछ लेना-देना नहीं। लेकिन अगर किसी ने सिर में पत्थर भी मार दिया हो तो भी अगर तुम साक्षी-भाव से देखोगे तो दर्द मिटेगा तो नहीं, लेकिन एक बात साफ हो जाएगी कि तुम दर्द नहीं हो। तुम दर्द से भिन्न हो। दर्द रहेगा। अगर मानसिक दर्द है तो मिट जाएगा। अगर शारीरिक दर्द है तो दर्द रहेगा। लेकिन दोनों हालत में तुम दर्द के पार हो जाओगे। मानसिक होगा तो दर्द गया; अगर शारीरिक होगा तो दर्द रहा; लेकिन अब मुझे दर्द हो रहा है, ऐसी प्रतीति नहीं होगी। दर्द हो रहा है, जैसे किसी और के सिर में दर्द हो रहा है; जैसे किसी और के पैर में दर्द हो रहा है; जैसे किसी और को चोट लगी है। बड़े दूर हो जाएगा। तुम खड़े देख रहे हो। तुम द्रष्टा, साक्षी-मात्र!

-ओशो, महागीता-22



अहा, जीवन कितना प्यारा!

-ओशो

तीसरा प्रश्न: जीवन इतना प्यारा क्यों है? हरेक वस्तु, व्यक्ति, सृष्टि, व्यक्त-अव्यक्त भी! रंग, नाद, गति, रुचि, कलह भी! भगवान, इसका स्मरण करने से भी हृदय भर आता है, आंसू बहते हैं, सांस खिंच जाती है। बात बंद हो जाती है। रुदन होता है। कुछ बता नहीं सकती भगवन! आंख बंद होती है और बैठ जाती हूँ।



आनंद भारती! जीवन प्यारा ही हो सकता है, क्योंकि जीवन परमात्मा है! जीवन उस परम प्यारे की अभिव्यक्ति है। वही तो प्रगट हुआ है अनंत-अनंत रूपों में। तुमने मंदिर बनाकर उसे झुठला दिया, क्योंकि उसका मंदिर तो सब तरफ है। जहां झुक गए वहीं उसका मंदिर। जहां आंख खोली वहीं उसकी छवि। जहां सुनने को राजी हुए वहीं उसका नाद। जो देखो, जो सुनो, जो चखो, सब वही है।

इसलिए तो उपनिषद् कह सके: अन्नं ब्रह्म। ऐसा वक्तव्य दुनिया के किसी शास्त्र में नहीं है। और जब पहली दफा उपनिषदों के अनुवाद किये गये और जब अंग्रेजी में लिखा गया फुड इज गॉड, लोग बड़े हैरान हुए—भोजन और भगवान! अब अनुवाद भी क्या करो? थोड़े चाँके कि यह किस तरह का वक्तव्य है! समझे भी नहीं। सीधा-सीधा शाब्दिक अनुवाद कर दिया—फुड इज गॉड, अन्नं ब्रह्म। चूक हो गयी। इतने महत् वचनों के सीधे-सीधे अनुवाद नहीं होते। इतने महत् वचनों के तो केवल परोक्ष अनुवाद होते हैं। ऐसे वचनों को समझाया जा सकता है, सीधा-सीधा अनुवादित नहीं किया जा सकता। यह तो बड़ा महत्वपूर्ण वचन है।

उपनिषद् यह कह रहे हैं कि स्वाद भी लगे तो उसी का, और तो कोई है नहीं। लेनेवाला भी वही है; वह जो भीतर बैठा स्वाद ले रहा है वह भी वही है; और जिसका स्वाद ले रहा है वह भी वही है। तुमने तोड़ा एक वृक्ष से नासपाती का फल; नासपाती में भी वही है, तुम में भी वही है, तुम दोनों भिन्न नहीं हो। वह एक ढंग था उसके प्रगट होने का, तुम दूसरे ढंग हो उसके प्रगट होने के। परमात्मा अनंत रूपों में अभिव्यजित हुआ है। ये सारे गीत उसके हैं, गायक एक है। प्यारा तो होगा ही जगत और जीवन।

लेकिन मैं समझता हूँ आनंद भारती की क्या अड़चन है। हमें सदियों से सिखाया गया है कि जीवन पाप है। हमें समझाया गया है कि जीवन तो हमारे पिछले जन्मों के पापों का फल है, प्यारा कैसे हो सकता है? जिन्होंने भी जीवन को पाप कहा है, उन्होंने परमात्मा को पाप कह दिया! नहीं समझे वे उपनिषदों के वचन। जिन्होंने जीवन को पापों का फल कह दिया, उन्होंने परमात्मा के प्रसाद का तिरस्कार कर दिया।

इसलिए जो मेरे पास आये हैं, जो मेरे पास धीरे-धीरे ध्यान की सीढ़ियां उतर रहे हैं, उन्हें तो आज नहीं कल यह अड़चन आयेगी, जैसा आनंद भारती को आ गयी। एक दिन ऐसा होगा अचानक सुबह जागकर तुम पाओगे कि सारा जगत अपूर्व रूप से प्रीतिकर है, सारा जीवन उसके नाद से भरा है। उसी की वीणा बज रही है। वही गाता है पक्षियों में। वही बहता है सर-सरिताओं में। वही सागर में उत्तुंग लहरें उठाता है। वही चांदतारों में झांकता है। जुगनू से लेकर सूर्यो तक उसी का प्रकाश है। पापियों में भी वही बैठा है, उतना ही जितना पुण्यात्माओं में; रतीभर कम नहीं।

रावण में तुम सोचते हो राम कम हैं? उतने ही राम रावण में हैं जितने राम में, जरा भी भेद-भाव नहीं है; भेद-भाव हो ही नहीं सकता। यह दूसरी बात है कि रामलीला के लिए दो हिस्सों में बंटना जरूरी है। तुम सोचते हो कि रावण के बिना रामलीला हो सकेगी? कैसे होगी; सहारा ही गिर जायेगा। रावण के बिना राम हो सकेंगे, तुम सोचते हो? असंभव है। जरा लिखकर देखो कोई कथा राम की; रावण को छोड़ दो, सिर्फ राम ही राम की कथा लिखो। तुम खुद ही पाओगे, बिल्कुल बेस्वाद हो गयी। कुछ रस न रहा, कुछ अर्थ न रहा। खड़े हैं धनुषबाण लिए, खुद भी थक जायेंगे, तुम भी थक जाओगे। बैठी हैं सीता मइया और बैठे हैं रामचंद्र जी। न कोई चोरी ले जाता, न कोई घटना घटती।

जरा एक-आध दफे किसी गांव में रामलीला तो करके देखो बिना रावण के। पहले दिन लोग आयेंगे, फिर दूसरे दिन लोग आना बंद हो जायेंगे कि सार ही क्या है? सजा है दरबार, बैठे हैं रामचंद्र जी। लोग ही पूछने लगेंगे खड़े होकर कि अब रामलीला कब शुरू होगी, यह क्या हो रहा है?

जीवन की अभिव्यक्ति द्वंद में है। जीवन द्वंद्वात्मक है, डायलेक्टिकल है। इसलिए यहां प्रकाश है और अंधेरा है, जन्म है और मृत्यु है, अच्छा है और बुरा है, सफेद है और काला है, सुंदर है और कुरूप है, राम है और रावण है। जो जानते हैं वे कहेंगे: दोनों में उसका ही खेल है। और जो ऐसा जान ले, फिर उसे अड़चन नहीं रह जाती; फिर जीवन बड़ा प्यारा लगेगा। फिर तो जीवन में तुम्हें सब जगह सौंदर्य का अनुभव होगा, क्योंकि उसकी छाप पाओगे। जगह-जगह उसकी पगध्वनि सुनाई पड़ेगी।

दिल है फिरदौस की बहारों में
फिक्र-एतूबा के शाख-सारों में
हाय मदहोश रात का अफसू
मैं जमीं पर हूं, रूह तारों में

जरा समझ आयेगी तो तुम जमीन पर न रह जाओगे; जमीन पर भी रहोगे और तुम्हारी रूह तारों में होगी। तुम फैलने लगोगे। तुम्हारी आत्मा विराट होने लगेगी। तुममें कमल खिलने लगेंगे।

तेरे गीतों की लै अरे तोबा!
यह तरब, यह निशात और यह लोच।
क्यों न दुनिया पिघल के बह जाये
इक जरा तू ही अपने दिल में सोच।

ऐ कि तू रागिनी में है मदहोश
ऐ कि तू गुम है मस्त तानों में
थम, कि गीत अपने बाजुओं पे मुझे
लिये जाता है आसमानों में!

जरा तुम खुलो। जरा तुम जागकर देखो। जरा अपने तथाकथित साधु संन्यासियों से दी गयी शिक्षा को हटाकर रखो एक किनारे। फिर से आंख खोलो। फिर से पहचान लो प्रकृति की। और तुम चकित हो जाओगे।

ऐ कि तू रागिनी में है मदहोश
ऐ कि तू गुम है मस्त तानों में

थम, कि गीत अपने बाजुओं पे मुझे
लिये जाता है आसमानों में!

तुम्हें सब तरफ से उसका गीत घेर लेगा, कि तुम उड़ने लगोगे आसमानों में, कि तुम डरने
लगोगे, कि तुम घबड़ा जाओगे कि यह क्या हुआ जाता है! इतना सौंदर्य है! और इतना अनायास
बरस उठे, जैसे बूंद में आ जाये सागर!

आनंद भारती ठीक ही पूछती है। मस्त हो रही है, आनंद-मग्न हो रही है। इतनी मस्त हो रही
है कि पहले आगे बैठती थी, अब उसको पीछे बिठाना पड़ता है। क्योंकि आगे बैठे-बैठे वह मस्त होने
लगती थी, इसलिए दूसरों को बाधा शुरू हो जाती थी। हंसने लगती, बेवजह! वजह से हंसो तो
ठीक है। कि मैंने कोई कहानी कही, कि कोई चुटकुला कहा कि तुम हंसो तो ठीक। मगर आनंद
भारती इतनी देर रुकती ही न कि मैं चुटकुला कहूँ, पहले ही हंस देती। मानकर ही चलती कि कहूँगा
ही, कहता ही होऊँगा, अब क्या रुकना! तो बेचारी को पीछे बैठना पड़ रहा है। एक मस्ती आ रही
है, एक आनंद-भाव आ रहा है। आसमानों में उड़ी जा रही है।

तो लगोगा, जीवन इतना प्यारा क्यों है? उत्तर मैं क्या दूँ? जीवन प्यारा है। कुछ और किया
नहीं जा सकता। जीवन सदा से प्यारा है। सिर्फ तुम्हारी आंखों पर परदे थे; परदे खिसकने शुरू हो
गये। तुम्हारी आंख पर सिद्धांतों का जाल था, जाल टूटना शुरू हो गया, जाली टूटनी शुरू हो
गयी।

और मेरा काम यहां क्या है—तुम्हारी आंख की धूल थोड़ी साफ करूँ; तुम्हारी आंख से
थोड़ी धूल पोछूँ, ताकि आंख दर्पण बन जाये और चीजों का प्रतिबिंब वैसा बनने लगे जैसी चीजें हैं।

तुम्हारे नाम जैसी, छलकते जाम जैसी,
मुहब्बत सी नशीली, शरद की चांदनी है।।

हृदय को मोहती है, प्रणय संगीत जैसी,
नयन को सोहती है, सपन के मीत जैसी,
तुम्हारे रूप जैसी, वसंती धूप जैसी,
मधुस्मृति सी रसीली, शरद की चांदनी है।।

चांदनी खिल रही है, तुम्हारे हास जैसी,
उमंगें भर रही है, मिलन की आस जैसी,
प्रणय की बांह जैसी, अलक की छांह जैसी,
प्रिये! तुम सी लजीली, शरद की चांदनी है।।

हुई है क्या न जाने, अनोखी बात जैसी,
भरे पुलकन बदन में, प्रथम मधुरात जैसी,
हंसी दिल खोल पूनम, गया अब हार संयम,
वचन से भी हठीली, शरद की चांदनी है।।

तुम्हारे नाम जैसी, छलकते जाम जैसी,
मुहब्बत सी नशीली, शरद की चांदनी है।।

अस्तित्व तो बड़े ही प्रीतिकर सौंदर्य से भरा है। यहां तो चांदनी ही चांदनी है। यहां तो चांद ही
चांद है। यहां सब शीतल है, सिर्फ तुम उत्पन्न रह जाओ। तुम्हारा ताप जरा कम हो।

ध्यान और क्या है? तुम्हारे ताप को कम करने की प्रक्रिया है, तुम्हारा तापमान थोड़ा नीचे
गिराने का उपाय है। लोग बड़े उत्पन्न हैं। लोग बड़े ज्वरग्रस्त हैं। लोग विक्षिप्त हैं। हजार-हजार

वासनाओं ने उन्हें उत्तप्त किया है। उनके चित्त में बड़ी आपाधापी है; शांति का क्षण ही नहीं आता, विश्राम की घड़ी ही नहीं आती। रुके पांव तो मिले गांव! मगर पैर रुकते नहीं और गांव मिलता नहीं। रुको तो मंजिल अभी है, यहीं है। मगर तुम हो कि दौड़े चले जाते हो, तुम हो कि भागे चले जाते हो। तुम सोचते हो कि जितनी तेजी से दौड़ूंगा, उतनी जल्दी पहुंचूंगा। तुम जितनी तेजी से दौड़ोगे, उतनी दूर निकल जाओगे। क्योंकि मंजिल वहां है जहां तुम हो, मंजिल कहीं और नहीं है।

परमात्मा यहां है, यही मेरी उदघोषणा है। परमात्मा अभी है, यही मेरी देशना है। अभी और यहीं! कल पर मत टालना। और तब अचानक तुम्हारी आंख से परदा उठ जाएगा। कल का परदा तुम्हारी आंख पर पड़ा है। तुम कहते हो कल होगा, कल होगा। और इस जिंदगी के कल चुक जाते हैं तो तुम कहते हो अगली जिंदगी में होगा, फिर कल! और अगर अगली जिंदगियों के कल भी चुक जाते हैं तो तुम कहते हो परलोक में होगा। और आगे का कल, मगर तुम कल पर टाले जाते हो। तुमने कल पर परमात्मा को टालकर परमात्मा को झूठा कर दिया।

परमात्मा अभी है, यहीं, इसी क्षण; तुम्हारी आंख से जरा घूँट सरके। हटाओ बुर्क, हटाओ ये घूँट! और घूँट हैं क्या? व्यर्थ के विचार, जो सदियों-सदियों में तुम्हारे सिर पर थोप दिये गये हैं। तुम्हारी खोपड़ी में शास्त्र भरे पड़े हैं, इसलिए सत्य प्रगट नहीं हो पाता।

गोरख, देखते हो, बार-बार कहते हैं: हे पंडित, पढ़ कर तो खूब देख लिया, अब रह कर देख! हम रहता का साथी, कि हम तो उनके संगी-साथी हैं जो रह रहे हैं।

जीयो परमात्मा को, प्रार्थनाएं बहुत हो चुकीं। परमात्मा को खाओ, परमात्मा को पीयो, परमात्मा को ओढ़ो, परमात्मा को पहनो, परमात्मा में जागो, परमात्मा में सोओ--जीयो परमात्मा को! हो चुकीं प्रार्थनाएं बहुत, पूजाएं बहुत; अर्चन, यज्ञ, हवन बहुत हो चुके; उनसे कुछ भी नहीं हुआ। जीयो। अन्नं ब्रह्म! स्वाद लो। भोजन भी करो तो याद रखना--वही है! किसी से बात करो तो याद रखना--वही है! धीरे-धीरे पहचान सघन होगी। धीरे-धीरे प्राण उसके सौंदर्य से अभिभूत होंगे। वह प्यारा दिखाई पड़ेगा।

वेणी में तारक-फूल गूँथ,
निशि ने मेरा शृंगार किया;
राका-शशि ने बन शीश फूल,
छवि का मोहक संसार दिया;
उषा उनकी पद-लाली से,
हंस मेरी मांग संवार गई!
में तो उन पर बलिहार गई!

बिन मांगे प्यार-दुलार दिया,
सम्मान और सत्कार दिया;
रह गई मुक्ति करबद्ध खड़ी,
मैंने बंधन स्वीकार किया;
वे हार-हार कर जीत गए,
मैं जीत-जीतकर हार गई!
में तो उन पर बलिहार गई!

उनकी छाया में पली सदा,
उनके पीछे ही चली सदा;
उनके ही जीवन-मंदिर में,
मैं मोम-दीप-सी जली सदा;
मैं उनको पा जग भूल गई,
अपने को स्वयं बिसार गई!



मैं तो उन पर बलिहार गई!
 कब चाहा प्यार—दुलार मिले,
 फूलों का मृदु गलहार मिले;
 पूजा—अर्चन ही ध्येय रहा,
 बस पूजा का अधिकार मिले;
 उनके श्री चरणों पर हंसकर,
 मैं तन—मन सब—कुछ वार गई
 मैं तो उन पर बलिहार गई।

कहाँ खोजने जा रहे हो? बलिहार होना है तो इसी क्षण हो जाओ, क्योंकि वह मौजूद है।

उनके श्री चरणों पर हंसकर,
 मैं तन—मन सब—कुछ वार गई
 मैं तो उन पर बलिहार गई!
 मैं उनको पा जग भूल गई,
 अपने को स्वयं बिसार गई!
 मैं तो उन पर बलिहार गई!
 वे हार—हारकर जीत गए,
 मैं जीत—जीतकर हार गई!
 मैं तो उन पर बलिहार गई!
 उषा उनकी पद—लाली से,
 हंस मेरी मांग संवार गई!
 मैं तो उन पर बलिहार गई!



परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं है जिससे तुम्हारा कभी मिलन होगा। परमात्मा इसी अस्तित्व का दूसरा नाम है। मिलन हो रहा है, लेकिन तुम्हारी भ्रांत धारणा कि परमात्मा कोई व्यक्ति है, कि मिलेगा कहीं राम के रूप में, कि मिलेगा कहीं कृष्ण के रूप में, कि क्राइस्ट के रूप में, कि बुद्ध के रूप में, कि महावीर के रूप में। इसी से तुम भटके हो, इसीलिए मिलना नहीं हो पा रहा है। तुम्हारी धारणा अड़चन बन रही है।

परमात्मा सामने खड़ा है, लेकिन तुम कहते हो जब तक धनुष—बाण हाथ न लोगे...तब लगी झुके न माथ। माथा हमारा झुकनेवाला नहीं। पहले धनुष—बाण लो हाथ। तुम्हारी शर्तें हैं। तुम्हारे छोटे—छोटे लोगों की शर्तें तो ठीक हैं; यह तुलसीदास का वचन है।

तुलसीदास को ले गये कुछ मित्र कृष्ण के मंदिर में। सब तो झुके, तुलसीदास न झुके। उन्होंने कहा मेरा माथा नहीं झुकेगा! मैं तो बस एक को ही जानता हूँ—धनुष—बाण हाथ में जो लेता है। अब उधर कृष्ण खड़े हैं बांसुरी बजाते, मोर—मुकुट बांधे। कृष्ण नहीं जंचते तुलसीदास को।

कैसा संकीर्ण चित्त है हमारे तथाकथित महात्माओं का भी! रामचंद्रजी को बांसुरी न बजाने दोगे? धनुष—बाण ही लिये रहें चौबीस घंटे? आदमियों को भी छुड़ी मिलती है। ओवरटाइम मी कभी खतम हो जाता है। लेकिन वे कहते हैं जब तक धनुष—बाण हाथ न लोगे, मैं नहीं झूकूंगा। मैं तो सिर्फ एक के सामने झुकता हूँ—धनुष—बाण वाले के।

यह जरा ख्याल करना, यह आदमी झुकना जानता ही नहीं। यह तो कह रहा है कि झुकूंगा भी तब जब मेरी शर्त पूरी हो। यह झुकना भी सशर्त है। इस झुकने में भी अहंकार है। यह कहता है, मेरी शर्त पूरी करो तो मैं झुकूँ। यह सौदा है साफ। अगर झुकवाना हो मुझे, अगर रस हो तुम्हें कि मैं झुकूँ तो मेरी शर्त पूरी करो। मैं तो अपनी धारणा के सामने झुकूंगा। यह अहंकार है। तुम कैसे हो, मुझे कुछ लेना—देना नहीं है। अभी तुम बांसुरी बजा रहे हो, यह मोर—मुकुट बांधे खड़े हो, खड़े रहो। यह मेरी मान्यता नहीं, मैं तो अपनी मान्यता के सामने झुकूंगा। ले लो धनुष—बाण हाथ, तो मैं झुक जाऊँ।

यही अड़चन है। अब ये बेचारे वृक्ष कैसे धनुष-बाण हाथ लें? यह सूत्रज कैसे धनुष-बाण हाथ ले? ये चांदतारे कैसे धनुष-बाण हाथ लें? कठिनाई है। और परमात्मा खड़ा है सूत्रज की तरह द्वार पर आकर, मगर तुम न झुकोगे। बाबा तुलसीदास नहीं झुके तो तुम कैसे झुकोगे! धनुष-बाण लो हाथ, फिर झुकूंगा।

अस्तित्व धनुष-बाण हाथ नहीं ले सकता और न बांसुरी हाथ ले सकता है। अस्तित्व कोई व्यक्ति थोड़े ही है। लेकिन हमने व्यक्ति की धारणा बना रखी है कि परमात्मा कोई व्यक्ति है। बस भटकते रहो। तुम्हें कभी परमात्मा नहीं मिलेगा। और अगर कभी मिल जाये धनुष-बाण हाथ लिये, तो समझ रखना कि यह तुम्हारे मन की भ्रांति है, तुम्हारी कल्पना का जाल है, यह तुम्हारा सपना। यह तुमने इतने दिन तक सपना देखा है कि अब तुम खुली आंख भी देखने लगे हो। यह दिवास्वप्न है। यह एक विभ्रांति है।

यह कोई परमात्मा नहीं है जो तुम्हारे भीतर आंख जब तुम बंद करते हो, धनुष-बाण लेकर खड़ा हो जाता है, कि बांसुरी बजाता है, कि सूली पर लटका हुआ जीसस...। यह तो तुम्हारी मान्यता है। और तुमने इस मान्यता को बचपन से इतना दोहराया है, इतना दोहराया है, इतना दोहराया है कि दोहरा-दोहरा कर तुमने अपने को आत्म-सम्मोहित कर लिया है। अब तुम्हें दिखाई पड़ रहा है। यह तुम कोई भी चीज इस तरह देख सकते हो। जरा दोहराये चले जाओ, दोहराये चले जाओ, जिद किये चले जाओ; कोई भी चीज तुम्हें ऐसी ही दिखाई पड़नी शुरू हो जायेगी। तुम थोड़े प्रयोग करके देखो।

नागार्जुन के पास एक युवक गया। और उसने कहा कि मुझे परमात्मा का अनुभव होना शुरू हो गया है। उनकी छवि सामने खड़ी हो जाती है। आंख बंद करता हूं, मंद-मंद स्मित परमात्मा सामने खड़े, बड़ा रस आता है। नागार्जुन ने कहा: तुम एक काम करो। नागार्जुन एक फक्कड़ साधु था, अदभुत साधु था; जैसा गोरख, ऐसा ही आदमी। उसने कहा, तू एक काम कर, फिर पीछे बात करेंगे इस अनुभव की। तू सामने यह जो छोटी-सी गुफा है इसके भीतर बैठ जा, और तीन दिन तक यही सोच कि मैं आदमी नहीं हूं, भैंस हूं।

उसने कहा: क्या मामला, क्यों सोचूं? नागार्जुन ने कहा कि अगर मुझे कुछ संबंध रखना है और कुछ समझना है तो यह करना पड़ेगा; एक छोटा-सा प्रयोग है, इसके बाद फिर रहस्य खोलूंगा। तीन दिन वह आदमी बैठा रहा; जिद्दी आदमी था। जो भगवान की छवि तक को खींच लाया था, भैंस में क्या रखा है? लग गया जोर से, तीन दिन न सोया, न खाया, न पीया! भूखा-प्यासा, थका-मांदा रटता ही रहा एक बात कि मैं भैंस हूं। एक दिन, दो दिन, दूसरे दिन वहां से, भीतर से भैंस की आवाज सुनाई पड़ने लगी। बाहर में गुफा से लोग झांककर देखने लगे कि मामला क्या है? था तो आदमी ही, मगर भैंस की आवाज निकलने लगी, रंभाने लगा। तीसरे दिन जब आवाज बहुत हो गयी और नागार्जुन को बहुत विघ्न-बाधा पड़ने लगी उसकी आवाज से, तो नागार्जुन उठा अपनी गुफा से, गया और कहा कि मित्र अब बाहर आ जाओ। वह बाहर आने की कोशिश करने लगा, लेकिन बाहर निकल न पाये।



नागार्जुन ने पूछा, बात क्या है? उसने कहा, निकलूँ कैसे, मेरे सींग... दरवाजा छोटा है। नागार्जुन ने उसे हिलाया और कहा: आंख खोल नासमझ! यह मैंने तुझसे इसलिए करने को कहा कि मैं समझ गया तुझे देखकर कि तू जिसको परमात्मा समझ रहा है यह तेरा आत्म-सम्मोहन है। अब देख तूने अपने को भैंस समझ लिया। तीन दिन में भैंस हो गया। हुआ कुछ भी नहीं है; तू वैसा ही का वैसा आदमी है; दरवाजा वही। जैसा तू भीतर आया था वैसा ही का वैसा है। निकल बाहर!

आंख खोली, थोड़ा चौंका। धक्का मारा उसको तो बाहर निकल आया। लेकिन अभी उसके सींग अटकने लगे थे!

तुमने देखा होगा अगर किसी सम्मोहित करने वाले को कभी मंच पर, किसी जादूगर को, तो वह सम्मोहित कर देता है लोगों को। सिर्फ उनको भाव बिठा देता है मन में। बस जो भाव बिठा देता है, वही वे करने लगते हैं, वैसा ही व्यवहार करने लगते हैं।

जिसको तुमने धर्म के नाम से जाना है वह आत्म-सम्मोहन से ज्यादा नहीं है। वास्तविक धर्म समस्त सम्मोहन से मुक्त होने का नाम है। और तब परमात्मा व्यक्ति नहीं है, तब परमात्मा समष्टि है। तब परमात्मा इस सारे अस्तित्व का जोड़ मात्र है। और तब अदभुत रसधार बहती है। क्योंकि जहां जाओ उसी से मिलना हो जाता है। फिर जगत, फिर जीवन बहुत प्यारा है! और जब जीवन ऐसा प्यारा है तभी समझना कि धर्म का तुम्हारे जीवन में आविर्भाव हुआ, सूत्रपात हुआ, धर्म की पहली बूंद पड़ी।

आनंद भारती! शुभ हो रहा है। इसको चिंता मत बनाना, संदेह मत करना, प्रश्न मत उठाना—इसमें डूबना, और गहरे डूबना! परमात्मा सौंदर्य है, परम सौंदर्य है। जहां सौंदर्य दिखाई पड़े, समझना उसी की पदचाप सुनाई पड़ी। परमात्मा संगीत है, परम संगीत है। जहां नाद का अनुभव हो, जानना वही गुणगुनाया। परमात्मा प्रकाश है, फिर चाहे दीये का हो और चाहे चांदतारों का। जहां प्रकाश दिखाई पड़े उसी को पहचानना। परमात्मा चैतन्य है, फिर चाहे तुम्हारे भीतर हो, चाहे तुम्हारे बच्चे के, चाहे तुम्हारे पड़ोसी के। परमात्मा जीवन है, फिर तुम्हारा जीवन हो कि पक्षी का, कि पशु का, कि पौधे का।

परमात्मा को उसकी अनंत भाव-भंगिमाओं में पहचानो। कितना विराट मंदिर उसने दिया है, जिसका चंदोवा आकाश है! कितना विराट मंदिर उसने दिया है, जहां रोज रात दीवाली है! कितने दीये जलाता है! वैज्ञानिक गिनती नहीं कर पाये हैं अभी तक। तुम खाली आंख से जो गिनती कर सकते हो तारों की वह तीन हजार से ज्यादा नहीं होती। वैज्ञानिक जो गिनती करते हैं, वे थक गये गिनती करते-करते। चार अरब तारों की गिनती हो चुकी। मगर यह सिर्फ शुरुआत है। अभी तारे और हैं, अभी और हैं। जितना वैज्ञानिक गिनती करते जाते हैं, लगता है और आगे, और आगे...! कोई अंत नहीं मालूम होता। रोज रात दीवाली होती है और कैसे अंधे लोग हैं, कोई देखता ही नहीं दीवाली को! रोज सुबह उसकी होली होती है, कितनी गुलाल उड़ती है, कितने फूल खिलते हैं, कितनी सुगंध छूटती है, कितना इत्र बिखेरा जाता है; मगर लोग अंधे हैं। रोज सुबह उसकी शहनाई बजती है कितने-कितने कंठों से! मगर लोग बहरे हैं।

जीसस ने बार-बार कहा है: अगर आंख हों तो देख लो, अगर कान हों तो सुन लो। क्या तुम सोचते हो जीसस बहरों और अंधों के किसी आश्रम में बोल रहे थे? जीसस तुम्हीं जैसे लोगों से बोल रहे थे, जिनकी आंख भी थी, कान भी थे; लेकिन न तो आंखें देखती हैं और न कान सुनते हैं। आंखें बड़ी सीमित हो गयी हैं, बड़ा क्षुद्र देखती हैं। कान भी बहुत सीमित हो गये हैं, बड़ा क्षुद्र सुनते हैं।

मैं तुम्हें सिखाता हूँ संवेदनशीलता। तुम्हारी प्रत्येक इंद्रिय गहन रूप से संवेदनशील हो जाये। तुम्हारी प्रत्येक इंद्रिय अपनी परिपूर्णता से संवेदनशील हो जाये। तुम्हारी प्रत्येक इंद्रिय ऐसी जल उठे जैसे मशाल जले दोनों ओर से एक साथ। और तब सारे अनुभव उसके ही अनुभव हैं।

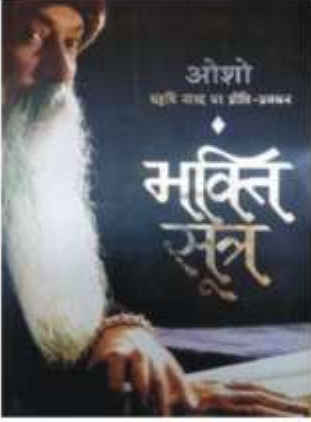
जीवन निश्चित ही प्यारा है!

—मरौ हे जोगी मरौ—6



भक्ति संबंधी ओशो साहित्य

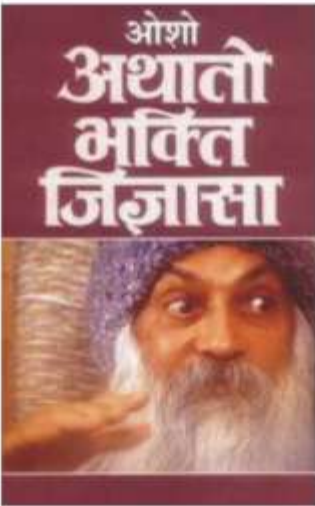
क्लिक करके पढ़िए, सुनिए व डाउनलोड कीजिए



नारद भक्ति सूत्र, पुस्तक



नारद भक्ति सूत्र 20 ऑडियो



अथातो भक्ति जिज्ञासा, पुस्तक भाग-1



अथातो भक्ति जिज्ञासा, पुस्तक भाग-2



अथातो भक्ति जिज्ञासा, 40 ऑडियो

अध्यात्म प्रेमियों के संग शेयर कीजिए



समस्त हिन्दी-अंग्रेजी ओशो साहित्य निशुल्क प्राप्ति हेतु

लिंक



शिकायती मनोवृत्ति : कितनी जहरीली!

— संगीता
उल्हासनगर (महा.)

अभी आंख पूरी तरह से खुली भी नहीं थी कि सभी से शिकायतों का आदान-प्रदान शुरू हो गया!

अचानक मन में ख्याल आया, क्यों हम मनुष्यों में ना पक्षियों की भांति चहचहाना है, ना हवा की भांति लहराना है, ना प्रति की भांति गुनगुनाना है। केवल शिकायत, शिकायत और शिकायत! अनुसंधान बताते हैं कि साधारण से साधारण वार्तालाप में भी मनुष्य हर दूसरे मिनिट शिकायत करता है! हमें खुशी मिलती है, शिकायत करने में। मजा आता है—सुनने में नहीं—सुनने में किसी की भी रुचि नहीं है।

हम शिकायत करते हैं इस अपेक्षा से कि हमें सहानुभूति मिलेगी, लोग हमारे दर्द को समझेंगे! लेकिन होता इसका विपरीत है! सामने वाला कुछ सुनता ही नहीं और पलट-वार में अपनी शिकायतों का पिटारा खोल लेता है। वह सिद्ध करता है कि उसके ऊपर जो मुसीबतों का पहाड़ टूटा है, वह आपके ऊपर पड़ रहे कष्टों से अधिक भारी है।

हम शिकायत करते हैं क्योंकि ऐसा करने से हमें तृप्ति मिलती है, एहसास होता है अपने श्रेष्ठ होने का। अपनी कमी पर तो ध्यान जाता नहीं है क्योंकि हम दूसरों के अवगुणों का अवलोकन करने में व्यस्त रहते हैं। अगर किसी ने कुछ अच्छा काम किया तो हम तारीफ करने की बजाए निंदा करते हैं कहते हैं यह कौन सी बड़ी बात है, यह तो हमारे बाएं हाथ का खेल है। और अगर कोई कुछ गलती कर दे तो हम राई का पहाड़ बनाने से नहीं चूकते हैं।

मनोवैज्ञानिक खोजों से पता चला है कि लगातार शिकायत भाव में रहने से हमारा कितना नुकसान होता है! हमारे दिमाग का वह हिस्सा जो सोचने-समझने का काम करता है, वह धीरे-धीरे निष्क्रिय होता जाता है! अगर कोई कठिनाई आती है तो उसको हल करने की बजाय हम दूसरे को कारण बताने लगते हैं, उसको भला-बुरा कहते हैं! जैसे कि किसी पर दोषारोपण करने मात्र से समस्या का समाधान हो जाएगा! स्वयं का कर्म करना छोड़, भाग्य पर ही निर्भर रह जाते हैं!



इस तरह शिकायती प्रवृत्ति में जीने से नकारात्मक सोच उत्पन्न होती है जिससे दिल और दिमाग परेशान रहते हैं, क्षत-विक्षत होते हैं! धीरे धीरे इसका असर हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है! कई तरह की बीमारियों से ग्रसित हो सकते हैं क्योंकि शिकायत करने से मस्तिष्क की ही क्षति नहीं होती, वरन शरीर स्टेरॉइड एवं एड्रीनेलिन जैसे तनाव हार्मोन जारी करता है जो आपके रक्तचाप, ब्लड शुगर और मोटापे को बढ़ाने के लिए काफी हैं! बीमार पड़ जाते हैं तो आरोप लगाते हैं दूसरों पर कि लोग जलते हैं, नजर लगा देते हैं इत्यादि इत्यादि!!

लगातार शिकायत करते रहने से हमारे संबंध भी मधुर नहीं रह पाते। अब भला हर वक्त शिकायत करने वाले बंदे से कौन बातचीत करना चाहेगा? सब दूर से ही निकल लेते हैं। किसी को रोना रोने की आदत है तो आप कुछ घंटे उसके साथ बैठ कर रो तो नहीं सकते!

अगर हम शिकायत मनोवृत्ति से और शिकायतकर्ताओं से दूरी बना लें, उमंग-उत्साह को जवान रखें और अपेक्षाओं को कम से कम कर दें तो जीवन काफी सरल, सहज और प्रफुल्लता से ओतप्रोत हो जाएगा। अपने नजरिये को सकारात्मक बनाए रखने के लिए कमी-कभार इस सुप्रसिद्धगीत के बोल गुनगुना लेना चाहिए—

ऐ मालिक तेरे बंदे हम, ऐसे हो हमारे कर्म
नेकी पर चलें और बदी से टलें
ताकि हंसते हुए निकले जनम!

मैंने जान-बूझकर दम की जगह जनम लिखा है। गलती नहीं हुई है—शिकायत मत भेजना। हा... हा.. हा..!

Hara Meditation

-ओशो

Concentrate the energy on the Hara, the point two inches below the navel. That is the center from where one enters life and that is the center from where one dies and goes out of life. So that is the contact center between the body and the soul.

When to do this meditation:

In the night, when you go to sleep, and first thing in the morning.

Duration: 10-15 minutes.

Step 1: Locate the Hara

Lie down on the bed and put both your hands two inches below the navel and press a little.

Step 2: Take a Deep Breath!

Start breathing, deep breathing. You will feel that center coming up and down with the breathing. Feel your whole energy there as if you are shrinking and shrinking and shrinking and you are just existing there as a small center, very concentrated energy.

Step 3: Center While You Sleep!

Fall asleep doing it that will be helpful. Then the whole night that centering persists. Again and again the unconscious mind goes and rests there. So the whole night without your knowing, you will be coming in many ways in deep contact with the center.

Step 4: Reconnect with the Hara

In the morning, the moment that you feel that sleep has gone, don't open your eyes first. Again put your hands there, push a little, start breathing; again feel the Hara. Do this for 10-15 minutes and then get up.

Do this every night, every morning. Within three months you will start feeling centered, deeply rooted in one self.

It is very essential to have a centering otherwise one feels fragmentary; then one is not together. One is just like a jigsaw all fragments and not a whole. It is a bad shape, because without a center a man can drag but cannot really live. Without a center you can go on doing routine things in your life, but you can never be creative, you cannot love. You will live the minimum. The maximum will not be possible for you. Only by centering does one live at the maximum, at the zenith, at the peak, at the climax, and that is the only living, a real life.

There will be less thinking because energy will not move to the head, it will go to the Hara. The more you feel the Hara, the more you concentrate there, the more you will find a discipline arising in you. That comes naturally, it has not to be forced.

The more you are aware of the Hara, the less you will become afraid of life and death because that is the center of life and death. Once you become attuned to the Hara center, you can live courageously. Courage arises out of it: less thinking, more silence, less uncontrolled moments, natural discipline, courage and rootedness, a groundedness.

Compiled from-

A Rose is a Rose is a Rose-18, This Is It!-8



Prem means love and *dhanya* means blessed.. blessed by love. Love is the only blessing there is, and those who love are the only ones who are blessed. All others simply live a life of curse. Nobody is cursing them; they themselves are responsible. If one wants to live a life of tremendous bliss and blessing, one should be more loving -- not loving to a particular person, just loving.



-----*****-----
Anand means bliss and *Rudra* is one of the names of Shiva. The Hindus have a trinity of gods. Brahma is the creator god, or God's creative function. Vishnu is one who maintains the existence, or God's maintaining function. And Shiva or Rudra is one who destroys the world when it is no more needed; God's destructive functioning.

Each creation needs destruction, and without destruction there is no creation. That is one of the most beautiful concepts ever evolved because it combines both the polarities. So Rudra is the function of the divine of destruction. The very word means wildness, chaos, because each creation is out of chaos. So it is not negative in the western sense. It is very positive.

If you really want to be born, you will have to die. That death is very positive. If you want to make a new house, you demolish the old. That demolishing is very very positive, because without it the new will never happen.

So Rudra is the god who goes on destroying that which has become old and is no more needed. It is a very revolutionary concept. The Christian concept of creation is as if it happened once, forever. Somewhere in the past God created the world and since then He has not bothered with it. There has been no connection, no live connection.

But the Hindu concept is that God goes on creating continuously. It is not that in some moment He created the world. The creation is continuous and eternal. Right this moment He is doing the creation, so He is more like creativity than like a creator. Of course when He continuously creates, He has to destroy. So whatsoever has become useless, whatsoever becomes mechanical, whatsoever becomes old, is destroyed.

I give you this name, Rudra, to be creatively destructive. Whatsoever you feel has become old, is of no use, that you just go on carrying out of habit, destroy. Go on destroying the past so the future is allowed to be. Go on destroying the junk that the past accumulates naturally, so that the future can have space within you and can enter you.

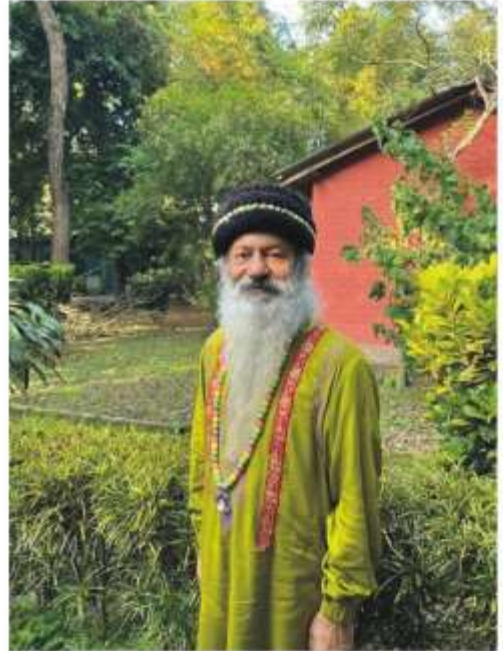
-A Rose is a rose is rose 5

प्रश्न—दास्य भक्ति का भाव विकसित करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

भाव विकसित करने का उतना सवाल नहीं, जितनी समझने की बात है. हम उसके दास हैं ही. उस मालिक की मर्जी से ही सब हो रहा है, इसका अवलोकन करें. गौर से जिंदगी को देखें और कर्ताभाव विलीन हो जाएगा. हिंदुओं में प्रथा रही नाम में दास जोड़ने की— कबीरदास, सूरदास, नरहरिदास, हरिदास. मुसलमानों में भी गुलाम शब्द जोड़ा जाता है— गुलाम अली, गुलाम मुहम्मद. अंग्रेजी में अनुवाद करने में बड़ी मुश्किल खड़ी हो जाती है. अंग्रेजी का 'स्लेम' शब्द नकारात्मक अर्थ लिए हुए है, वह पर्यायवाची नहीं है. उसमें मजबूरी, हीनता, दुख समाया हुआ है. पश्चिमी भाषाओं में दास्य भक्ति का कोई समानार्थी शब्द नहीं है. भक्ति तो महा-आनंद की घटना है. विराट के संग अनन्य होने की अनुभूति है. कल ही में एक प्यारी कथा पढ़ रहा था. सुनो—

यह कहानी बहुत पुरानी है. किसी नगर के समीप एक पहाड़ी पर तीन वृक्ष थे. वे तीनों अपने सुख-दुःख और सपनों के बारे में एक दूसरे से बातें किया करते थे.

एक दिन पहले वृक्ष ने कहा— 'मैं खजाना रखने वाला बड़ा सा बक्सा बनना चाहता हूँ. मेरे भीतर हीरे-जवाहरात और दुनिया की सबसे कीमती निधियां भरी जाएँ. मुझे बड़े हुनर और परिश्रम से सजाया जाय, नक्काशीदार बेल-बूटे बनाए जाएँ, सारी दुनिया मेरी खूबसूरती को निहारें, ऐसा मेरा सपना है.'



दूसरे वृक्ष ने कहा— 'मैं तो एक विराट जलयान बनना चाहता हूँ. बड़े-बड़े राजा और रानी मुझपर सवार हों और दूर देश की यात्राएं करें. मैं अथाह समंदर की जलराशि में हिलोरें लूँ. मेरे भीतर सभी सुरक्षित महसूस करें और सबका यकीन मेरी शक्ति में हो... मैं यही चाहता हूँ.'

अंत में तीसरे वृक्ष ने कहा— 'मैं तो इस जंगल का सबसे बड़ा और ऊंचा वृक्ष ही बनना चाहता हूँ. लोग दूर से ही मुझे देखकर पहचान लें, वे मुझे देखकर ईश्वर का स्मरण करें, और मेरी शाखाएँ स्वर्ग तक पहुंचें... मैं संसार का सर्वश्रेष्ठ वृक्ष ही बनना चाहता हूँ.'

ऐसे ही सपने देखते-देखते कुछ साल गुजर गए. एक दिन उस जंगल में कुछ लकड़हारे आए. उनमें से जब एक ने पहले वृक्ष को देखा तो अपने साथियों से कहा— 'ये जबरदस्त वृक्ष देखो! इसे बड़ई को बेचने पर बहुत पैसे मिलेंगे.' और उसने पहले वृक्ष को काट दिया. वृक्ष तो खुश था, उसे यकीन था कि बड़ई उससे खजाने का बक्सा बनाएगा.

दूसरे वृक्ष के बारे में लकड़हारे ने कहा— 'यह वृक्ष भी लंबा और मजबूत है. मैं इसे जहाज बनाने वालों को बेचूंगा.' दूसरा वृक्ष भी खुश था, उसका चाहा भी पूरा होने वाला था.

लकड़हारे जब तीसरे वृक्ष के पास आए तो वह भयभीत हो गया. वह जानता था कि अगर

उसे काट दिया गया तो उसका सपना पूरा नहीं हो पाएगा. एक लकड़हारा बोला- 'इस वृक्ष से मुझे कोई खास चीज नहीं बनानी है इसलिए इसे मैं ले लेता हूँ'. और उसने तीसरे वृक्ष को काट दिया.

पहले वृक्ष को एक बड़ई ने खरीद लिया और उससे पशुओं को चारा खिलानेवाला कठौता बनाया. कठौते को एक पशुगृह में रखकर उसमें भूसा भर दिया गया. बेचारे वृक्ष ने तो इसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी. दूसरे वृक्ष को काटकर उससे मछली पकड़नेवाली छोटी नौका बना दी गई. भव्य जलयान बनकर राजा-महाराजाओं को लाने-ले जाने का उसका सपना भी चूर-चूर हो गया. तीसरे वृक्ष को लकड़ी के बड़े-बड़े टुकड़ों में काट लिया गया और टुकड़ों को अंधेरी कोठरी में रखकर लोग भूल गए.

एक दिन उस पशुशाला में एक आदमी अपनी पत्नी के साथ आया. स्त्री ने वहां एक बच्चे को जन्म दिया. वे बच्चे को चारा खिलानेवाले कठौते में सुलाने लगे. कठौता अब पालने के काम आने लगा. पहले वृक्ष ने स्वयं को धन्य माना कि अब वह संसार की सबसे मूल्यवान निधि अर्थात् एक शिशु को आसरा दे रहा था. वह शिशु कोई ओर नहीं ईसा मसीह थे।

समय बीतता गया. सालों बाद कुछ नवयुवक दूसरे वृक्ष से बनाई गई नौका में बैठकर मछली पकड़ने के लिए गए. उसी समय बड़े जोरों का तूफान उठा और नौका तथा उसमें बैठे युवकों को लगा कि अब कोई भी जीवित नहीं बचेगा. एक युवक नौका में निश्चित सा सो रहा था. उसके साथियों ने उसे जगाया और तूफान के बारे में बताया. वह युवक उठा और उसने नौका में खड़े होकर उफनते समुद्र और झंझावाती हवाओं से कहा- 'शांत हो जाओ'. और तूफान थम गया. यह देखकर दूसरे वृक्ष को लगा कि उसने दुनिया के परम ऐश्वर्यशाली सम्राट को सागर पार कराया है. वह युवक कोई ओर नहीं ईसा मसीह थे।

तीसरे वृक्ष के पास भी एक दिन कुछ लोग आए. उन्होंने उसके दो टुकड़ों को जोड़कर एक घायल आदमी के ऊपर लाद दिया. ठोकर खाते, गिरते-पड़ते उस आदमी का सड़क पर तमाशा देखती भीड़ अपमान करती रही. वे जब रुके तब सैनिकों ने लकड़ी के सलीब पर उस आदमी के हाथों-पैरों में कीलें ठोककर उसे पहाड़ी की चोटी पर खड़ा कर दिया. दो दिनों के बाद रविवार को तीसरे वृक्ष को इसका बोध हुआ कि उस पहाड़ी पर वह स्वर्ग और ईश्वर के सबसे समीप पहुंच गया था क्योंकि खुद ईसा मसीह को उस पर सूली चढ़ाया गया था.

प्रत्येक वृक्ष को वह मिल गया जिसकी उसने खाहिश की थी, लेकिन उस रूप में नहीं मिला जैसा वे चाहते थे. हम नहीं जानते कि अस्तित्व ने हमारे लिए क्या सोचा है... लेकिन उसका चुनाव ही सर्वश्रेष्ठ है. हम जैसे भी हैं, उसी की सेवा में हैं.

ईसा मसीह का नाम तो प्रतीकात्मक है. काव्य के रूप में लेना. इस कथा के मर्म को पकड़ना. तथ्य को समझना- हम उसके दास हैं ही! बस, उसकी मर्जी का महोत्सव मनाएं. ईसा मसीह ने सूली पर चढ़कर भी यही कहा था- हे प्रभु, तेरी मर्जी पूरी हो. अगर तू चाहता है कि इस ढंग से मेरी मृत्यु हो, तो ठीक! मालिक जैसा चाहे वैसा ठीक. यही दास्य भक्ति है- जीवन उसने दिया, वापस भी उसने लिया. राजी हैं तेरी रजा में!



जीवन की सार्थकता...?

हिंदी में क्वोरा पर पढ़ने के लिए संबंधित लिंक पर क्लिक कीजिए

- Q क्यों अपने मन के शैतान से संघर्ष करने पर भी सफलता नहीं मिलती?
- Q क्या प्रेम का जीवन ही सृजनात्मक जीवन है?
- Q क्या अध्यात्म के लोक में ज्ञान का अर्थ है 'स्वबोध' यानी आत्मज्ञता?
- Q क्या संसार में कोई अंतर पड़ेगा यदि मैं ब्रह्मज्ञान को पा लूँ?
- Q क्या यही ताओवादी अध्यात्म है कि लोग अपने भोजन में रस लें, अपनी पोशाक सुंदर बनाएं, अपने घरों में संतुष्ट रहें, अपने रीति-रिवाज का मजा लें?
- Q ध्यान की ऐसी विधि बताएँ जिसे दिनचर्या के दौरान ही साधा जा सके?
- Q क्यों ओशो कहते हैं कि बुद्धत्व आप के जीवन की अहम प्राथमिकता बने?



स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती जी से - 2 मिनट में मैं क्या तथ्यों को सीख सकता हूँ, जो मेरे बाकी के जीवन के लिए उपयोगी होंगे ?

इतनी जल्दबाजी में तो बस इतना ही सीख सकते हैं कि शीघ्रता करने से विलम्ब हो जाता है। यह शिक्षा जिंदगी भर काम आएगी।

अगर वक्त हो तो यह प्रेरक प्रसंग पढ़ लीजिए-

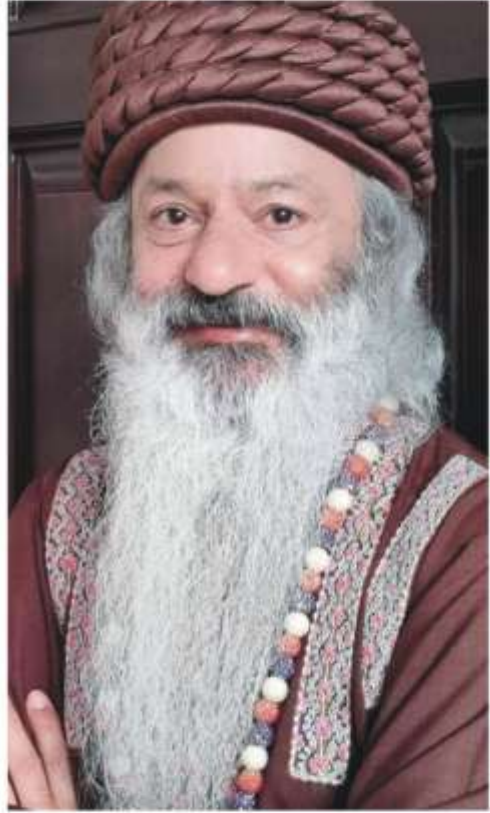
किसी प्रश्नकर्ता ने पूछा कि-मैं समाधि चाहता हूँ, और शीघ्र। यह शीघ्रता भयंकर तनाव बनती जा रही है। मैं क्या करूँ ?

सद्गुरु ओशो ने उत्तर में कहा कि- एक तो समाधि या संबोधि चाही नहीं जा सकती। जो चाहा जा सकता है, वह संसार है। जो नहीं चाहा जा सकता, वही परमात्मा है, वही समाधि है। चाह और समाधि का कोई संबंध कभी नहीं होता, उनका मिलन कभी नहीं होता।

चाह का मतलब ही है कि तुम जो नहीं हो, वह। और समाधि का अर्थ है, तुम जो हो, वह।

जो हो, उसको क्या चाहोगे ?कैसे चाहोगे ?कोई स्त्री पुरुष होना चाह सकती है, लेकिन कोई स्त्री स्त्री कैसे होना चाहेगी ?है ही। तुम जो हो, उसे कैसे चाहोगे ?चाहने का प्रयोजन क्या है ?चाहना सदा उसका होता है जो तुम नहीं हो। और जो तुम नहीं हो, वह तुम कभी नहीं हो सकते।

इसलिए चाहना दुख में ले जाता है, असफलता में ले जाता है, विषाद में ले जाता है। हर चाह टूटती है, खंडित होती है। हर चाह के बाद तुम मुंह के बल जमीन पर गिरते हो, धूल भरी रह जाती है तुम्हारे मुंह में। हर चाह विफलता लाती है; हर चाह हताशा लाती है। चाह से कभी कोई उपलब्धि नहीं होती। हो नहीं सकती। क्योंकि चाह का मौलिक अर्थ है: वही होने की



कोशिश जो तुम नहीं हो। वह तुम हो नहीं सकते। आम आम होगा, नीम नीम होगी।

अब चाह का अर्थ होता है, नीम आम होना चाहे। नीम इस तरह की भूल करती नहीं, इसलिए नीम परेशान नहीं है। नहीं तो नीम की भी नींद खो जाए, और नीम भी विकसित हो और पागलखाने में पड़ी हो, और घबड़ाहट में जहर पी ले, आत्मघात कर ले। लेकिन कोई नीम इस चिंता में ही नहीं है। नीम पूरे मजे में है। अपनी निबौरियों के साथ पूरी राजी है। न आम को फिक्र है कुछ और होने की। न गुलाब कमल होना चाहता है, न कमल गुलाब होना चाहता है। घास का फूल भी फिक्र नहीं करता, दो कौड़ी फिक्र नहीं करता गुलाब होने की। घास का फूल सिर्फ घास होना चाहता है। आदमी को छोड़ कर इस सारी प्रति में किसी को कुछ और होने की चिंता नहीं है। इसलिए प्रकृति में ऐसी शांति है। ऐसा अपूर्व सुख छया है।

हिमालय पर जाते हो, तुम्हें जो शांति दिखाई पड़ती है, वह किस बात की शांति है? वह इसी बात की शांति है कि वहां कोई चाह नहीं। पहाड़ पहाड़ हैं, वृक्ष वृक्ष हैं, झरने झरने हैं, नदियां नदियां हैं, वहां कोई चाह नहीं, अचाह व्याप्त है। उसी अचाह के कारण तुम भी थोड़ी देर के लिए बड़े सन्नाटे में भर जाते हो। बंबई जाते हो, चारों तरफ शोरगुल है चाह का, तन जाते हो, खिंच जाते हो, परेशान हो जाते हो; दिन भर के बाद बंबई से घर लौटते हो, राहत मिलती है। चाह का बाजार है।

जहां-जहां आदमी की दुनिया है, वहां-वहां चाह का शोरगुल है। जहां-जहां परमात्मा की दुनिया है, वहां-वहां अचाह का संगीत है। वृक्षों के पास बैठो, वृक्षों से कुछ सीखो। एक ही बात समझ में आएगी वृक्षों के पास कि हर वृक्ष जैसा है वैसा होने से राजी है। उसमें कभी भी प्रतिस्पर्धा नहीं है। यही सूत्र है।

समाधि तो फल सकती है, अभी, इसी क्षण, मगर तुम्हीं बाधा हो।

तुम कह रहे हो: मैं संबोधि, समाधि चाहता हूं, और शीघ्र।

एक तो चाह में ही भूल हो गई, चाह में ही जहर घोल दिया तुमने अपने प्राणों में; और फिर दूसरा जहर और ला रहे हो.. शीघ्र। धीरज भी नहीं है, धैर्य भी नहीं है। यह करेला हुआ नीम चढ़ा। ऐसे ही कड़वा था और नीम पर चढ़ा दिया। यह दोहरी बात हो गई। यह बीमारी व्यर्थ तुमने बढ़ा ली। शीघ्रता से कभी कोई संबोधि को या समाधि को उपलब्ध हुआ है? वहां तो वे ही पहुंचते हैं जो अनंत प्रतीक्षा करने को राजी हैं। जो कहते हैं, आज तो आज, कल तो कल, परसों तो परसों, इस जन्म में तो इस जन्म में, अगले जन्म में तो अगले जन्म में.. और अगर कभी नहीं तो कभी नहीं। जो इतनी हिम्मत रखते हैं कि कभी नहीं तो कभी नहीं। ऐसी जिनकी विश्रान्ति है, ऐसे जो तनावरहित हैं, ऐसा जहां धैर्य का झरना बह रहा है,

वहां समाधि अभी है और यहीं, इसी वक्त घट जाएगी। तुम्हें मेरी बात समझ में न आती हो तो करके देख लो। मगर ख्याल रखना, भूल में मत पड़ना, यह मत सोचना कि चलो, अगर तेजी से इस ढंग से घटती है, अगर यह ढंग है तेजी से घटाने का, तो यही कर लेंगे। तो चूक जाओगे; क्योंकि यह ढंग नहीं है। यह तेजी से घटाने का ढंग नहीं है। तेजी से तो घटाने की बात ही बाधा है।

तो एक तो चाह और शीघ्र, स्वभावतः शीघ्रता तनाव बनी जा रही है। बन ही जाएगी, पागल कर देगी तुम्हें। अगर यही पागलपन चाहिए तो धन के पीछे दौड़ो, ध्यान के पीछे नहीं। क्योंकि धन और पागलपन का थोड़ा संबंध है। पागलपन से दौड़ो तो मिल जाएगा। अगर बिल्कुल सिर देकर पड़ ही गए पीछे, तो मिल जाएगा। दूसरे पागल भी लगे हैं, अगर तुम्हारा पागलपन उनसे ज्यादा हुआ, तो मिल ही जाएगा। दूसरे भी दौड़ रहे हैं, लेकिन अगर तुम धुआंधार पीछे पड़ गए, तो धन मिल जाएगा। हालांकि धन से कुछ मिलता नहीं, लेकिन इतनी तो राहत होगी कि जिसको चाहा था उसको पा लिया।

सिकंदर जरूर बड़ा पागल रहा होगा, नहीं तो दुनिया जीतना मुश्किल मामला है! तुम्हारी राजधानियों में पागलों का जमाव है। जो पागल हैं, वे सब वहां पहुंच जाते हैं। मेरा वश चले तो सब राजधानियों पर बड़ी दीवाल उठवा कर, जो उनके भीतर हैं उनको बाहर निकलने का मौका न दूं, उनको भीतर ही रख.. दुनिया में शांति हो जाए। एक बार जो एम.पी. हो जाए, एक बार जो मिनिस्टर हो जाए, उसे फिर राजधानी से बाहर न निकलने दूं। फिर चाहे वह भूतपूर्व हो, या कुछ भी हो, राजधानी से बाहर न निकलने दूं। उस पर रुकावट डाल दूं। ये जहर लेकर फिर सारे देश में घूमते हैं, सारी दुनिया में घूमते हैं, ये दूसरों में भी जहर पैदा करवाते हैं। ये पागल लोग हैं, यह पागलों की जमात है।

मगर अगर तुम्हें शीघ्रता चाहिए और चाह का रस है, तो धन और पद के पीछे दौड़ो; क्योंकि उनसे चाह का तर्क तालमेल खाता है। तुम ध्यान के पीछे दौड़ रहे हो! ध्यान तो उनको मिलता है जो बैठ जाते हैं, दौड़ते नहीं। ध्यान कोई दिल्ली थोड़े ही है, दिल्ली चलो! ध्यान के लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं है, यहीं आंख बंद करो, यहीं हलके-फुलके होकर बैठ जाओ, यहीं राजी हो जाओ अपने से, यहीं स्वीकार कर लो जैसा है, जो है, इंच भर भी विरोध न रखो, सहज भाव से जीने लगे, अपने आप घट जाएगी समाधि। तुम्हें उसका हिसाब रखने की भी जरूरत नहीं है। अपने आप दिन निकल आएगा; अपने आप रात कट जाएगी।

फिर तुम करोगे भी क्या? जब सूरज निकलेगा तभी निकलेगा न! तुम्हारे शोरगुल मचाने से, दंड-बैठक लगाने से, प्राणायाम साधने से सूरज

निकलने वाला नहीं है। सूरज जब निकलेगा तब निकलेगा। तुम मजे से सोए रहो, जितनी देर नहीं निकला है इतनी देर विश्राम कर लो, जब निकलेगा तो फिर काम-धाम के दिन आएंगे।

तुम कहते हो: समाधि चाहिए।

जिनको समाधि मिल गई उनसे तो पूछो! जब समाधि मिल जाती है तो फिर बांटो उसे! जाग गए, अब जगाओ औरों को! हजार झंझटें आती हैं। मेरी मानो! जब तक नहीं मिली तब तक शांति से विश्राम कर लो थोड़ी देर और, भगवान को धन्यवाद दो।



दिन निकलने दे
जरा सा दिन निकलने दे!
रास्ते आधे-अधूरे से
दिख रहे जो तानपूरे से
तार में सरगम सम्हलने दे
थम, जरा सा दिन निकलने दे!
राग जब आकार पाएगा
स्याह घेरा टूट जाएगा
खून, स्याही में उबलने दे
थम, जरा सा दिन निकलने दे!
अंगुलियां खुद तार को छूकर
व्योम को ले आएगी भू पर
घाटियों को आंख मलने दे
थम, जरा सा दिन निकलने दे!

जल्दी न करो, दिन अपने से करीब आ रहा है। सुबह अपने से होती है। आदमी के किए कुछ भी नहीं होता। करने वाला कर रहा है। जब रात हो तो सोए रहो, और जब दिन हो तो काम में लग जाओ। जब समाधि मिलेगी, तो बांटना पड़ेगा.. बड़ा काम आ जाएगा सिर पर! जब तक समाधि नहीं मिली, तब तक भगवान को धन्यवाद दो, चादर ओढ़ कर सोए रहो; विश्राम कर लो, समाधि के लिए तैयार कर लो अपने को, समाधि के लिए शक्ति जुटा लो कि जब मिले समाधि, तो तुम बांट सको।

अब यह मजा है। जिनको समाधि नहीं मिली, वे भी दौड़ते हैं.. वे दौड़ते हैं पाने के लिए। और जिनको समाधि मिली, वे भी दौड़ते हैं.. वे दौड़ते हैं बांटने के लिए। महावीर को समाधि मिली, फिर बयालीस साल तक दौड़ते रहे एक गांव से दूसरे गांव। बुद्ध को समाधि मिली, फिर चालीस साल तक सुबह से सांझ तक समझाते रहे लोगों को। जगत का क्रिया-कलाप चलता ही रहता है। अज्ञानी भी क्रिया में होता है, ज्ञानी भी क्रिया में होता है। फर्क इतना ही होता है: अज्ञानी पाने की क्रिया में होता है, ज्ञानी देने की क्रिया में होता है। फर्क बड़ा है।

लेकिन ज्ञान की घटना तभी घटती है जब तुम उसकी अपेक्षा भी नहीं कर रहे थे। जब तुम सोच भी नहीं रहे थे कि अब घटेगी। आकस्मिक घटती है। अनायास घटती है। एक दिन अचानक तुम पाते हो कि तुम्हें किसी ताजी हवा ने घेर लिया, कोई सूरज उगा, कोई किरण उतरी, कोई गीत बजने लगा, कोई तार छिड़ गया।

अंगुलियां खुद तार को छूकर

व्योम को ले आएगी भू पर

घाटियों को आंख मलने दे

थम, जरा सा दिन निकलने दे!

संबोधि को चाहो मत, समाधि को चाहो मत। चाह बाधा है। फिर शीघ्रता तो भूल कर मत करना। समाधि कोई मौसमी फूल का पौधा नहीं है कि अभी बोया और दो-चार-आठ दिन में अंकुर निकल आए और दो-तीन सप्ताह में फूल आगए.. मगर पांच-छह सप्ताह में गए भी! आए भी और गए भी; पीछे कुछ न बचा। समाधि तो विराट वृक्ष है। समय लगेगा, धीरज मांगेगा, प्रतीक्षा चाहेगा धीरे-धीरे बढ़ेगा; तभी तो चांद-तारों से बात हो सकेगी, तभी तो हवाओं से मुलाकात हो सकेगी, तभी तो आकाश में फैल कर खड़ा हो सकेगा। समाधि है पृथ्वी का आकाश से मिलन। यह बड़ी घटना है। इससे बड़ी और कोई घटना नहीं है। यह घटना इतनी बड़ी है कि तुम्हारी छोटी सी चाह में नहीं समा सकती। चाह तो चम्मच जैसी है और यह घटना सागर जैसी है।

मैंने सुना है, अरस्तू एक दिन सागर के किनारे टहलने गया और उसने देखा कि एक पागल आदमी.. पागल ही होगा, अन्यथा ऐसा काम क्यों करता.. एक गड्ढा खोद लिया है रेत में और एक चम्मच लिए हुए है; दौड़ कर जाता है, सागर से चम्मच भरता है, आकर गड्ढे में डालता है, फिर भागता है, फिर चम्मच भरता है, फिर गड्ढे में डालता है। अरस्तू घूमता रहा, घूमता रहा, फिर उसकी जिज्ञासा बढ़ी, फिर उसे अपने को रोकना संभव नहीं हुआ। सज्जन आदमी था, एकदम से किसी के काम में बाधा नहीं डालना चाहता था, किसी



से पूछना भी तो ठीक नहीं, अपरिचित आदमी से, यह भी तो एक तरह का दूसरे की सीमा का अतिक्रमण है। मगर फिर बात बहुत बढ़ गई, उसकी भागदौड़, इतनी जिज्ञासा भर गई कि यह मामला क्या है? यह कर क्या रहा है? पूछ कि मेरे भाई, करते क्या हो? उसने कहा, क्या करता हूँ, सागर को उलीच कर रहूँगा! इस गह्वे में न भर दिया तो मेरा नाम नहीं! अरस्तू ने कहा कि मैं तो कोई बीच में आने वाला नहीं हूँ, मैं कौन हूँ जो बीच में कुछ कहूँ, लेकिन यह बात बड़े पागलपन की है, यह चम्मच से तू इतना बड़ा विराट सागर खाली कर लेगा! जन्म-जन्म लग जाएंगे, फिर भी न होगा। सदियां बीत जाएगी, फिर भी न होगा! और इस छेदे से गह्वे में भर लेगा? और वह आदमी खिलखिला कर हंसने लगा, और उसने कहा कि तुम क्या सोचते हो, तुम कुछ अन्य कर रहे हो? तुम कुछ भिन्न कर रहे हो? तुम इस छोटी सी खोपड़ी में परमात्मा को समाना चाहते हो? अरस्तू बड़ा विचारक था। तुम इस छोटी सी खोपड़ी में अगर परमात्मा को समा लेगा तो मेरा यह गह्व तुम्हारी खोपड़ी से बड़ा है और सागर परमात्मा से छेदा है; पागल कौन है?

अरस्तू ने इस घटना का उल्लेख किया है और उसने लिखा है कि उस दिन मुझे पता चला कि पागल मैं ही हूँ। उस पागल ने मुझ पर बड़ी कृपा की।

वह कौन आदमी रहा होगा? वह आदमी जरूर एक पहुंचा हुआ फकीर रहा होगा, समाधिस्थ रहा होगा। वह सिर्फ अरस्तू को जाने के लिए, अरस्तू को चेताने के लिए उस उपक्रम को किया था।

नहीं, तुम्हारी चाह तो छोटी है.. चाय की चम्मच.. इस चाह से तुम समाधि को नहीं पा सकोगे। चाह को जाने दो। और फिर जल्दबाजी मचा रहे हो! जल्दबाजी में तो चम्मच में थोड़ा-बहुत पानी आया, वह भी गिर जाएगा.. अगर ज्यादा भागदौड़ की तो, और ज्यादा जल्दबाजी की। तुमने देखा न, कभी-कभी जल्दबाजी में यह हो जाता है, ऊपर की बटन नीचे लग जाती है, नीचे की बटन ऊपर लग जाती है; सूटकेस में सामान रखना था, वह बाहर ही रह जाता है, सूटकेस बंद कर दिया। फिर उसको खोला तो चाबी नहीं चलती, कि चाबी अटक जाती है। तुमने जल्दबाजी में देखा, स्टेशन पहुंच गए और टिकट घर ही रह गई। और बड़ी जल्दी की!

जितनी जल्दबाजी करते हो, उतने ही अशांत हो जाते हो। जितने अशांत हो जाते हो, उतनी संभावना कम है समाधि की। शांत हो रहो। और शांत होने की कला है अचाह से भर जाना। चाहो ही मत, मांगो ही मत; कहो कि जो जब होना है, होगा, हम प्रतीक्षा करेंगे। जल्दी भी क्या है? समय अनंत है।

-अथातो भक्ति जिज्ञासा-18

स्वस्थ रहें, मस्त रहें

स्मरण शक्ति बढ़ाने के उपाय

-स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती

अगर आपको ऐसा महसूस होने लगे कि आपकी स्मरण शक्ति कमजोर हो रही है तो इसके उपाय के लिए किसी को क्या करना चाहिए?

स्मरण शक्ति बढ़ाने के उपाय

भूलने की आदत इंसान की सबसे खराब आदतों में से एक है, क्योंकि इस आदत के कारण न सिर्फ खुद वो इंसान जिसे भूलने की समस्या है, परेशान हो जाता है, बल्कि उससे जुड़े दूसरे लोग भी कई बार परेशानी में पड़ जाते हैं। आज कल की कॉम्प्यूटेशन भरी जिंदगी में तनाव इतना बढ़ गया है कि छोटी छोटी बातों को भी हम भूल जाते हैं, और अगर सही समय पर वो याद न आए तो परेशानियाँ बढ़ सकती हैं। आप चाहे किसी भी उम्र के क्यों ना हो आज का दौर ऐसा है कि आपको मानसिक रूप से स्वस्थ होने की बहुत ज्यादा जरूरत है। भूलने का मुख्य कारण एकाग्रता की कमी है।



अधिकतर समस्या रीकॉल करने में होती है, क्योंकि हमारे दिमाग को रीकॉल प्रोसेस के लिए जिन पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है, उनकी हमारे शरीर में कमी हो जाती है। इसलिए हम आज आप को दिमाग तेज करने के कुछ घरेलू उपाय और नुस्खे यहां बता रहे हैं। आइये जानते हैं उनके बारे में।



ब्राह्मी: दिमाग तेज करने में ब्राह्मी एक उत्तम आयुर्वेदिक औषधी है। इसके सेवन से याददाश्त तेज होती है। 1/2 चम्मच ब्राह्मी ले और 1 चम्मच हल्के गरम पानी में मिलाकर लेने से दिमाग की क्षमता बढ़ती है।

बादाम: 9 नग बादाम रात को पानी में भिगो दें। सुबह छिलके उतारकर बारीक पीस कर पेस्ट बना लें। अब एक गिलास दूध गर्म करें और उसमें बादाम का पेस्ट घोलें। इसमें 3 चम्मच शहद भी डालें। दूध जब हल्का गर्म हो तब पिएं। यह मिश्रण पीने के बाद दो घंटे तक कुछ न खाएं।

अखरोट: अखरोट की बनावट बिलकुल मस्तिष्क के जैसी होती है, और इसमें मस्तिष्क से सम्बंधित सभी रोगों को खत्म करने की क्षमता पाई जाती है। रोजाना अखरोट खाना शुरू करें।

मेहंदी: मेहंदी के पत्तों में कर्नोसिक तत्व पाया जाता है। जिससे इंसानी दिमाग की मांसपेशियाँ एक्टिव हो जाती हैं और इतना ही नहीं इसमें इतनी गजब की शक्ति होती है की इससे आपकी खोपी हुई याददाश्त तक वापस आ सकती है इसलिए लोग अपने दिमाग को सुकून देने के लिए और उसको ठंडा रखने के लिए अपने सर में मेहंदी लगाते हैं।

डार्क चॉकलेट: इसे खाने से दिमागी की कार्य शक्ति बढ़ती है और मेमोरी बूट होती है। इसका सेवन ज्यादा नहीं करें, क्योंकि इससे वजन भी बढ़ता है।

तुलसी के पत्ते: 10 तुलसी के पत्ते, 5 कालीमिर्च, 5 बादाम और थोड़ा सा शहद मिलाकर पिने से स्मरण शक्ति बढ़ती है। यह याददाश्त बढ़ाने का सरल उपाय है, आसानी से उपयोग में लाया जा सकता है।

कॉफी: जो लोग सुबह कॉफी पीते हैं, वे कॉफी न पीने वालों की तुलना में अधिक फुर्ती से अपने कार्य निपटा लेते हैं। यदि आप दोपहर में भी चुस्त रहना चाहते हैं तो कॉफी का सहारा लें। शोधकर्ताओं के अनुसार, कॉफीन मस्तिष्क के उन हिस्सों को क्रियाशील करता है, जहां से व्यक्ति की सक्रियता, मूड और ध्यान नियंत्रित होता है।

शंखपुष्पि: याददाश्त बढ़ाने के लिए शंखपुष्पी भी एक अच्छी औषधी है। रोजाना 1/2 चम्मच शंख पुष्पी 1 कप गुनगुने पानी में मिलाकर सेवन करने से दिमाग में ब्लड का सर्कुलेशन अच्छा रहता है और ब्रेन की पावर बढ़ती है।

हल्दी, अवोकाडो फल, केला, कैंफिर ग्रैन्स से निर्मित दही, ब्लू बेरी की भी स्मृति वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका है।

जहां उपनाम लिखना अनिवार्य हो मैं उस दस्तावेज या फार्म में अंतिम नाम का उपयोग करने से कैसे बच सकता हूं?

मैं इस समस्या से कैसे उबरा, वह आपको बताता हूं। बचपन से ही मुझे तथाकथित धर्म, संप्रदाय एवं जातिवाचक शब्दों से बहुत चिढ़ थी। जब आठवीं कक्षा का फॉर्म भर रहा था तब मैंने तय किया कि अपनी जाति अथवा सरनेम नहीं लिखूंगा। मेरे शिक्षक ने कहा कि यह अधूरा फार्म स्वीत नहीं होगा। मैंने उन से निवेदन किया कि मेरे नाम में दो शब्द हैं। क्या उनमें से एक को नाम और दूसरे को उपनाम की जगह लिख दूं? उन्होंने कहा कि हां यह संभव है। तब मेरा नाम शैलेन्द्र और उपनाम शेखर हो गया।

बचपन में मेरा नाम मेरे बड़े भाई और मेरे सतगुरु ओशो ने रखा था.. शैलेन्द्र शेखर। उन्हें लंबे नाम प्रिय थे। उनका 3 शब्दों वाला नाम मेरे चाचा जी ने रखा था.. रजनीश चंद्र मोहन। उपनाम मिलाकर चार शब्द हो जाते थे। बड़े होने पर ओशो ने उपनाम हटा दिया। बाद में प्रोफेसर (आचार्य) के पद पर नियुक्त होने से, लोग उन्हें आचार्य रजनीश के नाम से जानने लगे।

जिस प्रकार आसानी से मुझे सफलता मिल गई, वैसा ही कुछ आप कीजिए। कोर्ट में एफिडेविट करके 2 शब्दों वाला नया काव्यात्मक नाम रख लीजिए। अंशुमन का अर्थ: सूर्य/ चंद्रमा/ किरण से है। उपनाम 'आलोक' सुंदर लगेगा।



हंस दो जरा...!



सवाल: अगर अचानक से आप के सामने भगवान आ जाए तो आप क्या करेंगे?
जवाब: सबसे पहले तो यह कॉन्फर्म करेंगे कि भगवान हमारे पास आए हैं
या हम उनके पास गए हैं

Wife- तुम्हारे जीवन में Mobile के अलावा कुछ Important है तुम्हारे लिये...?
Husband- हाँ... Charger..

एक पति ने आत्मनिर्भर बनने का प्रयास किया , खुद ही किचन में चार स्लाइस ब्रेड सेकी और हरी चटनी लगाकर खा लिया... अब एक घंटे से बेचारा कमरे के कोने चुपचाप गुम सुम बैठा हुआ है। और बीबी बार बार पूछ रही है। किचन में मेंहदी भिगो के रखी हुई थी वो कहाँ गयी...😞😞😞



दोस्त:
भाई तूने आईफोन 13 लिया क्या ?

मैंने : ना भाई ना, स्कूटर ही खरीद लिया है, बैटरी वाला जिनसे बात करनी होती है, उनके घर जा के ही बात कर आता हूँ.....!!!
सस्ता भी पड़ता है..और चाय नास्ता भी हो जाता है ... लगे हाथ,, स्कूटर को चार्जिंग पर भी लगा देता हूँ....😄😄

जिंदगी में दो बात हमेशा याद रखना, अगर कोई हमें अच्छा लगता है तो अच्छा वो नहीं हम हैं। और अगर कोई बुरा लगता है तो..बुरा वही होगा क्योंकि हम तो अच्छे हैं 🙄

देव और पतिदेव में क्या अंतर है ?



देव की आरती-
सुखकर्ता दुःखहर्ता

पतिदेव की आरती-

'ऐसाकर्ता,
वैसाकर्ता, ये नहीं कर्ता, वो नहीं कर्ता
😄😄😄






आजकल का मौसम ऐसा है कि पंखा स्लो करो तो चुर्र चुर्र,
तेज करो तो नाक सुर्र सुर्र,
बंद करो तो मच्छर भुर्र भुर्र,
और इनके चक्कर में नींद फुर्र फुर्र !! 🙄🙄🙄🙄





माँ एवं स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती जी के वीडियो





Swami Shailendra sarswati ji: s Videos

-  महान जागरूकता (Intense Awareness) को विकसित करने के 5 सरल उपाय
-  क्या संसार में जो बुरा है, वो भी परमात्मा का रूप है? जानिए ७ चक्रों से जुड़े+ व- ऊर्जा के रूप
-  किसी को माफ़ कर देने पर भी गुस्सा शांत नहीं होता, क्या करें?

Ma Amrit Priya ji's Videos

-  गुरुवाणी कीर्तन सिमरन-आद सच, जुगाद सच
-  मोक्ष की खोज क्या है?

Shorts

-  सात चक्रों की खिलावट से आनंद व संतोष
-  गलत दिखाने वाला गलत हो जरूरी नहीं!

आओ पुकारें ओशो

मा अमृत प्रिया जी की म्यूजिक एल्बम



Aao Pukarien OSHO

Contents:

1. Aao Pukarien OSHO
2. Mere Jeewna ke Har Pal Ko

1. आओ पुकारें ओशो
2. मेरे जीवन के हर पल को



1. आओ पुकारें ओशो
2. मेरे जीवन के हर पल को



ओशो फ्रेगरेंस टीम, गुरुहरसहाय

गहन साधना शिविर



WWW.OSHOFRAGRANCE.ORG

दिनांक:-

6 जनवरी 2023 सुबह 9:00 बजे
11 जनवरी 2023 दोपहर तक

शिविर स्थल-

स्टार विला रिजॉर्ट्स, मुक्तसर रोड,
झंडू वाला, गुरुहरसहाय



ओशो के छोटे भाई...
स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती जी एवम
मा अमृत प्रिया जी के सानिध्य में

सहयोग राशि - प्रति व्यक्ति - 4100

कार्यक्रम सम्बंधी जानकारी हेतु संपर्क करें

98145-87745
98559-85180

rajneeshfragrance oshofragrance

दिए गए अकाउंट नंबर में 2000 एडवांस
डलवा कर अपनी बुकिंग कन्फर्म करें

HDFC BANK, A/C NAME - YATIN
A/C NO - 50100440057632
BRANCH - GURU HAR SAHAJ
IFSC - HDFC0001415

विगत जन्म के दान का फल

-ओशो

इस संतान में प्रत्येक माह एक कहानी शेयर करेंगे जो हर उम्र वाले बच्चों, युवाओं और बूढ़ों को प्रेरणा देगी।

श्रावस्ती के एक अपुत्रक श्रेष्ठी के मर जाने के बाद कौशल नरेश ने सात दिन तक उसके धन को गाड़ियों में ढुलवाकर राजमहल में मंगवाया। इन सात दिनों तक धन ढुलवाने में वह इस तरह उलझा कि भगवान के पास एक दिन भी न जा सका। वैसे साधारणतः वह नियम से प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान के दर्शन और सत्संग के लिए आता था।

जिस दिन धन ढुलवाने का कार्य पूरा हुआ, उस दिन उसे भगवान की याद आयी, सो वह भरी दुपहरी में ही भगवान के पास जा पहुंचा।

भगवान ने उससे दोपहर में आने का कारण पूछा। राजा ने सब समाचार बताए और फिर पूछा: भंते! एक बात मेरे मन को मथे डालती है। उस अपुत्रक श्रेष्ठी के पास इतना धन था कि मुझे सात दिन लग गए गाड़ियों में ढुलवाते-ढुलवाते, तब बामुशिकल उसके धन को राजमहल ला पाया हूं। फिर भी वह रूखा-सूखा खाता था! फटा-पुराना पहनता था! और टूटे हुए जराजीर्ण रथों पर चलता था!

इसे सुनकर भगवान ने कहा: महाराज! वह पूर्वकाल में तगरशिखी बुद्ध को दान दिया था। दान तो कुछ बड़ा नहीं दिया था। बड़े दान देने की उसकी क्षमता नहीं थी। दान तो बड़ा क्षुद्र दिया था। लेकिन क्षुद्र दान का विराट परिणाम हुआ। उस दान के फलस्वरूप उसे इतनी धन-संपत्ति इस जीवन में मिली।

दान तो उसने थोड़ा ही दिया था, पर दान देकर पीछे पछताया बहुत था- कि यह भी क्या भूल कर ली! यह भी किन बातों में आ गया!

उस पछतावे के कारण उसका मन अच्छा खाने-पहनने में नहीं लगता था। वह पछतावा पीछा कर रहा था। उस पछतावे के कारण रुपया हाथ से छोड़ने की उसकी क्षमता ही विलीन हो गयी थी। दान देना तो दूर, अपने उपयोग के लिए भी धन को व्यय करने की उसकी क्षमता खो गयी थी।

उस दान को देने से दो परिणाम हुए थे: एक परिणाम हुआ था कि दिया, तो बहुत उसके उत्तर में मिला। और देकर पछताया बहुत, तो उसका जीवन अत्यंत कृपणता से भर गया। इतना कि खुद भी खा नहीं सकता था, कपड़े नहीं पहन सकता था। महाकंजूस हो गया-पछतावे के कारण!

इसने संपत्ति के लिए ही अपने भाई के मरने पर उसके इकलौते बेटे को भी जंगल में ले जाकर मार डाला था। जिसके फलस्वरूप उसे स्वयं संतान पैदा नहीं हुई। उसके बांझ रह जाने का यही मूल कारण था।

इस समय मरकर वह महा नरक में उत्पन्न हुआ है। क्योंकि पुराना किया हुआ पुण्य समाप्त हो गया है, और उसने कोई नया पुण्य किया नहीं।

राजा ने भगवान की बात सुन कहा: भंते! उसने बड़ा बुरा कर्म किया, जो आप जैसे बुद्ध के पास ही विहार में रहते हुए भी न दान दिया, न धर्म-श्रवण किया, न अपनी संपत्ति का कोई सदुपयोग किया। कोई पुण्य न कमाया और सब छोड़कर अंततः मर ही गया!

शास्ता हंसे और बोले: ऐसे ही महाराज! बुद्धिहीन पुरुष धन-संपत्ति पाकर भी निर्वाण की तलाश नहीं करते हैं। और धन-संपत्ति के कारण उत्पन्न तृष्णा उनका दीर्घकाल तक हनन करती है। संसार को पार होने की कोशिश नहीं करने वाले दुबुद्धि मनुष्य को भोग नष्ट कर डालते हैं। भोग की तृष्णा में पड़कर वह दुबुद्धि पराए की तरह अपना ही घात करता है।

- एस धम्मो सनंतनो प्र-109



सब का बहुत-बहुत स्वागत है। सबको प्रणाम करती हूँ, मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

एक कहानी से आज की शुरुआत करते हैं। एक बच्चा मंदिर जाया करता था। अक्सर जाने की वजह से मंदिर में एक पुजारी से उसका परिचय हो गया था। और वह रोज कब जाता? जब उसकी परीक्षा आती पास में, तब वह जाता और जब उसके रिजल्ट आने होते परीक्षा के, तब वह जाता बारंबार। पुजारी देखता बच्चा मूर्ति को नमन करता, फूल चढ़ाता और मंदिर की सेवा भी करता। वह मांगता था कि मेरा रिजल्ट अच्छा आ जाए, कि मैं प्रथम, टॉप में आ जाऊँ। ऐसा हो जाता था हर बार।

फिर वह युवक हुआ और वह सर्विस नौकरी ढूँढने लगा, उसमें भी कांपटीशन। जब इंटरव्यूस आए तब वह फिर मन्दिर आए, सेवा करे और अपना वरदान मांगकर आए कि मुझे नौकरी मिल जाए। बेस्ट जो नौकरी चाहता था वह मिलती गई। कई नौकरियां बदली। इसी कारण फिर फिर आता। फिर मंदिर में बैठता पूजा करता,

पुजारी को प्रणाम करता और कहता कि अब मुझे नौकरी से ऊब हो गई है। मुझे लगता है कि अब मुझे व्यापार करना चाहिए और मुझे व्यापार के लिए आप आशीर्वाद दे। मैं नया व्यापार शुरू करने जा रहा हूँ। पुजारी से मिल गया आशीर्वाद, चला गया। उसका बिजनेस बहुत बड़ा हुआ, बहुत फला फूला। दुनिया का धनी हो गया। उसके बाद मंदिर नहीं गया।

बहुत वर्षों के बाद, फिर से वह मंदिर पहुंचा। फिर वह पूजा किया, सफाई करने लगा। रोज आने लगा, एवरी डेय बिना चुके और पुजारी से मिलता। पुजारी ने कहा तुम बड़े दिनों बाद आए हो और कैसा रहा तुम्हारा जीवन? बोला कि मुझे सब कुछ तो मिल गया आपके आशीर्वाद से लेकिन अब सब चीजों से ऊब हो गई है। मुझे मन की शांति चाहिए यह आशीर्वाद दे दो आप। तो पुजारी बोला यह आशीर्वाद मैं नहीं दे सकता, शांति तो अचाह से मिलती है। तुम अचाह में डूबो, निर्वासना में डूबो, बैठना सीखो, इस मंदिर में चुपचाप बैठना सीखो, यहां घंटियां बजती हैं इसे सुनना सीखो, यहां आरती होती है इस प्रकाश में देखना सीखो।

तब क्या था, बैठने लगा। वह जाकर बोलता है कि बैठा नहीं जाता। आप आशीर्वाद दे सकते हो, बात तुरंत बन सकती है। आज तक तो ऐसा ही हुआ, आपने आशीर्वाद दिया और बात तुरंत बन जाती थी। आप जो कहते थे वह हो जाता था। अब आप कह दे कि शांति मिल जाएगी तो मिल जाएगी, आपके आशीर्वाद से ही मिलेगी। पुजारी ने कहा तुम्हें समझाना चाहता हूँ शांति जो है वह अचाह से मिलती है, जब कोई चाहत ना बचे। तुम चुपचाप, मौन बैठना सीखो। उस मौन में, उस सन्नाटे में तुम्हारे भीतर शांति का अवतरण होगा, आनंद की स्फूर्णा होगी। प्रार्थना लाभ के लिए नहीं है। पुजारी ने उसे फिर समझाया कि प्रार्थना लाभ और उपयोग के लिए नहीं है। प्रार्थना एक हार्दिक संबंध है।

हमारा सारा शिक्षण बुद्धि का है। बुद्धि या तो नास्तिक बना देती है या नास्तिक से बदतर आस्तिक बना देती है। नास्तिक से बदतर आस्तिक किसको कहते हैं? जब आस्तिकता हमारी किसी कारण से होती है। जब हम कुछ चाहते हैं तब आस्तिक होते हैं, कोई चाह छुपी होती है, मांग छुपी है तो यह आस्तिकता नास्तिकता से भी बदतर है।

बुद्धि जो है एक ऊपरी सतह है, ऊपरी लेयर है जैसे सागर की लहर। कोई इसी को सब कुछ मान ले तो बात नहीं बनेगी क्योंकि वह सतह है। मन से हम जगत् से संबंध स्थापित करते हैं।

यदि कोई पहरेदार से पूछने लगे कि यह जो महल है इसके भीतर कुछ है। तो पहरेदार कहेगा कि वहां क्या रखा है। जो कुछ है मेरे यहां बैठे रहने में है, इस स्टूल पर रखा हुआ है। यहां पर बैठता हूँ, यहां सब कुछ है। पूरा पावर मेरे पास है, यही सारा जगत् है, कोई खजाना भीतर नहीं है। ठीक ऐसे ही बुद्धि भीतर जाने ही नहीं देती। बुद्धि पहरे के रूप में है बाहर के जगत् के लिए एक सुरक्षा कवच, सिक्योरिटी मेजर है और जब तक हम इसमें जिएंगे तब तक हम जो प्रार्थना और पूजा और धर्म का संबंध स्थापित नहीं कर सकते।

धर्म के संबंध के लिए हृदय से हृदय का संबंध चाहिये – हार्दिकता जब तक हृदय हमारा इनवॉल्व नहीं होगा, हृदय से नहीं जुड़ेंगे तब तक बात नहीं बनने वाली। हृदय से पूछना होगा धर्म के संबंध में, हृदय से पूछना होगा कि क्या करना है? और फिर बुद्धि से पूछे कि कैसे करना है? क्या करना है यह हृदय से पूछे और फिर बुद्धि से पूछिए कि कैसे करना है और तब बुद्धि और हृदय में एक सामंजस्य हो जाएगा। हमारी हालत कैसी रहती है – सामंजस्य नहीं है बुद्धि और हृदय में, बुद्धि कुछ कहती है और हृदय कुछ और। हृदय से लक्ष्य पूछना है, बुद्धि से हम साधन पूछेंगे।

बुद्धि के विकास से विज्ञान हुआ है और हृदय के विकास से धर्म जीवन में आयेगा। इसीलिए हृदय से जुड़कर, हार्दिकता से प्रार्थना करनी है। जब तक हम हार्दिकता से नहीं जुड़ेंगे केवल बुद्धि से जुड़ेंगे तो बोरडम पैदा होगी, ऊब पैदा होगी अध्यात्म में। धर्म के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा ऊब है। बुद्धि कहती है कि इतने समय में कुछ और कर लो, समय बेकार जा रहा है। वह बच्चा व्यक्ति हो गया, बड़ा हो गया तब ऊब गया, यह ऊब संसार मिलने के बाद पैदा हुई, सब चीजें, मंजिलें मिलने के बाद पैदा हुई, लेकिन यह बड़ी मजेदार बात है कि जब हम सांसारिक साधन उपलब्ध करने जाते हैं तो उस प्रोसेस में ऊब कभी भी नहीं आती। एक उमंग, एक आशा, एक उत्साह बना रहता है कि इसे हासिल करना है, मंजि को पाना है तब तक ऊब पैदा नहीं होती। लेकिन जब मंजिल मिल जाती है उसके बाद ऊब पैदा होती है। जितना चाहा उतना धन मिल गया फिर एक दिन धन से ऊब पैदा होती है, प्रेम जितना चाहा मिल गया, प्रशंसा जितनी चाही, पद मिल गया, प्रतिष्ठा मिल गई सब मिल गया तब अन्त में ऊब। लेकिन जब तक नहीं मिली उसे पाने के लिए आदमी कभी बोर नहीं होता ऊब पैदा नहीं होती।

परमात्मा का रास्ता बिल्कुल उल्टा है, प्रभु को पाने के जो मार्ग है ध्यान – बैठोगे संकल्प लोगे कि 3 महीने तक करना है लेकिन टूट, किसी कारणवश, कोई ना कोई बात होगी और एक ऊब पैदा होती है और वह प्रोसेस टूट जाता है। ऊब एक बाधा है प्रभु के स्मरण में। लेकिन एक मजेदार बात यह है कि जब प्रभु मिल जाता है तब ऊब कभी नहीं आती। संसार मिल जाता है मिलने की प्रोसेस में ऊब नहीं है मिलने के बाद ऊब है और परमात्मा मिलने के प्रोसेस में ऊब है लेकिन मिलने के बाद आनंद ही आनंद है। फिर कोई ऊब रहती नहीं है, आनंद ही आनंद है, रसपूर्ण है, उत्सवपूर्ण है। झरत दसहुं तिस मोती। संत कहते हैं मोतियों की बरसात होती है, नाद ही नाद बरस रहा है, आनंद ही आनंद बरस रहा है, प्रकाश ही प्रकाश बरस रहा है।

एक बात हमें भीतर ध्यान में आ जाए की जब हम कुछ अर्पित करते हैं तो हमारी यह आदत ना बने कि हम किसी कारण से अर्पित कर रहे हैं, कोई सेवा कर रहे हैं तो किसी कारण से कर रहे हैं, कोई पूजा प्रार्थना कर रहे हैं तो किसी कारण से कर रहे हैं, किसी मांग से कर रहे हैं। अर्पण की यह विधि अर्पण नहीं हुआ, ये तो व्यापार हुआ। जब हम बिना किसी कारण से किसी की सेवा करते हैं, कुछ कार्य करते हैं, कुछ पूजा प्रार्थना करते हैं आनंद करते हैं, अहोभाव से करते हैं, तब यह अर्पण की विधियां एक दिन परमात्मा के प्रति समर्पण बन जाता है।

यही अर्पण करने की छोटी-छोटी विधियां हम अपनी मां से प्रेम कर रहे हैं तो टोटल होकर, बिना बुद्धि के, पति पत्नी का आपस में प्रेम किसी हेतु कारण से नहीं, आप जो कर रहे हो टोटल होकर पूर्णता से किसी के लिए कुछ करो तो यह जो अर्पित करने की प्रोसेस है यह परमात्मा के प्रति समर्पण करने की एक भूमिका बन जाती है। अर्पण का भाव व्यक्ति के बाद फिर सूरज के प्रति सीखो, इन चांद तारों के प्रति, नदियों के प्रति, इस विराट प्रति के प्रति। कभी ऐसे ही बैठ गए उगते हुए सूरज को देखकर नमन भाव में डूब गये। नदियों को नमन, पौधे के आगे झुक गए, फूल के आगे मुस्कुरा दिए। फूल को देखें और देखते देखते डूब ही जाएं। लेकिन हम एक फूल को कितनी देर देखते हैं, कुछ ही पलों में ऊब पैदा हो जाती है। यह ऊब जो है यही बाधा है डूबने में।

ऊब बुद्धि की गलत विधि है, अर्पण करना हृदय की ठीक विधि है। अगर हमें याद हो जाए हम हर कार्य, छोटे-छोटे कार्य टोटल होकर करना सीखें, मौज में करना सीखें, अर्पित होकर करना सीखें तो बात बदल जायेगी। कार्य बिना किसी आशा के करें। दूसरी बात ऊब के प्रति सचेत रहना है या रास्ते में आएगा लेकिन हमें संकल्पित रहना है और स्मरण में डूबते जाना है फिर एक दिन यह स्मरण फलित हो जाता है और आनंद बन जाता है।

ध्यान साधना शिविर कार्यक्रम

सूचना: ऑनलाइन कार्यक्रम अब शनिवार से शुक्रवार



OSHO FRAGRANCE

Program Schedule



Date	Program	Place	Contact
26 Nov-2 Dec	Cosmic Realization Retreat	Online	Osho Fragrance Numbers
10-16 Dec	Osho Ke Anoothe Dhyan	Online	Osho Fragrance Numbers
11 Dec	Osho Janmotsav	Online + Shree Rajneesh Dhyana Mandir	Osho Fragrance Numbers
17-21 Dec	Tao Sadhana Shivr	Osho Madhuban, Champa, Chhattisgarh	7746968159 9575518984
22-25 Dec	Jeene Ki Kalaa	Osho Madhuban, Champa, Chhattisgarh	7746968159 9575518984
24-30 Dec	Nirvaan Retreat	Online	Osho Fragrance Numbers
6-11 Jan	Gehan Sadhana Shivr	Guruharsahai, Punjab	9814587745 9855985180 9914148909
7-13 Jan	Gehan Sadhana Shivr	Online	Osho Fragrance Numbers
19-22 Jan	Osho Panch Mahavrat	Osho Dhyana Mandir, Benar Road, Near Khora Bisal, Chatarpura, Jaipur, Rajasthan	8302371182 7339852998
21-27 Jan	Osho Loving Awareness Retreat	Online	Osho Fragrance Numbers
4-10 Feb	Omkar Sadhana Shivr	Online	Osho Fragrance Numbers
14-18 Feb	Osho Shiv Sutra Sadhana Shivr	Mechinagar Municipality 7, Jhapa, Nepal	+977 9852687502 +977 9842634891
18-24 Feb	Buddham Shamam Gachhami	Online	Osho Fragrance Numbers
20-24 Feb	Buddham Shamam Gachhami	Stone Age Resort, Sangkhaia Singtam, Near Gangtok, Sikkim	8250521088 9800846363 9679150753
20th eve-24th noon			
4-10 Mar	Divya Alok Sadhana Shivr	Online	Osho Fragrance Numbers
13-16 Mar	Geeta Dhyana Yagya (Adhyay - 16)	Osho Pyramid Gokulam Farm & Resort, Bardoli Kamrej Road, Mota, Surat, Gujarat	9374718325 9327799399

Osho Fragrance Numbers -
 9464247452
 9311806388
 9811064442
 9466661255
 9890341020
 8889709895

www.oshofragrance.org

[rajneeshfragrance](#)

[oshofragrance](#)

जीने की कला




22-25 दिसंबर 2022



स्थान - ओशो मधुवन
चाँपा, छत्तीसगढ़



अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें -
7746968159, 9575518984

[oshofragrance](#)

[RajneeshFragrance](#)

www.oshofragrance.org

ओशो जन्मोत्सव

Welcome with Family & Friends
to Meditate & Celebrate

**Osho's
91st Birthday**

www.oshofragrance.org

Sunday, 11 December

at


Shree Rajneesh Dhyam Mandir,
Kumashpur-Deepalpur Road, Vill. Murshidpur,
Bahalgarh, Distt. Sonipat, Haryana

Program
Registration: 2 PM
Welcome Tea: 3 PM
Meditation: 4.00 PM - 5.30 PM
Tea & Snacks: 5.30 PM - 6.30 PM
Meditation/Celebration:
6.30 PM - 8.30 PM
Prasaadam: 8.30 PM

VOLUNTARY CONTRIBUTION
PRIOR REGISTRATION IS SOLICITED

— * —

Please register at the following numbers
9464247452, 9311806388, 9811064442
9466661255, 9890341020, 8889709895



You are welcome with family and friends to celebrate Osho's Birthday on 11th December as per details on the above invitation.

* Request for Prior Registration For registration you can either message on
+91 94642 47452, +91 93118 06388, +91 98110 64442,
+91 94666 61255, +91 98903 41020, +91 88897 09895

or register online at this link <https://forms.gle/YxhEABMu7TQBTiar9>

Incase of any cancellation please do inform us.

* Contribution is Voluntary You can either transfer to our following bank account and send the screenshot to us or you can contribute when you come for the celebration.

Name- Osho FragranceAccount

type - SavingPunjab and Sind Bank,

Pushpanjali Enclave, Delhi.

Account No. 0869 1000 103 430IFSC code PSIB 000 1030

* **Google map location link of the ashram**

<https://goo.gl/maps/DrXWNALSAQZwdAJf6>



ThanksTeam Osho Fragrance

विभिन्न साधना शिविर की झलकियां



Osho Meditation Retreat 8-13 Oct, 2022 at Nagpur, Maharashtra



नेपाल यात्रा में

30 October 3rd Nov Bhakti Shivir at Sauraha (Chitwan) Nepal



Sauraha 1
Sauraha 2



7-9 Nov, 2022
Buddham Sharnma
Gachchami Retreat at
Lumbini, Nepal the
birthplace of Gautam
Buddha



लुंबिनी की शिविर

आयोजिका मां कमला और मां गीता, एवं काठमांडू की कार्यक्रम व्यवस्थापिका मां शक्ति और मां शर्मिला के संग।



<https://www-elumbinikhabar-com/2022/11/9943/>

उपरोक्त चिह्न/लिंक पर पढ़िए "लुंबिनी खबर" में प्रकाशित ओशो ध्यान साधना संबंधी समाचार।



ओशो जेतवन आश्रम, लुंबिनी में हमको आमंत्रित किया, वहां के संचालक स्वामी आनंद अभय जी ने। उनके परिवारजनों ने बहुत भावपूर्ण स्वागत किया। सत्रह एकड़ हरी भरी रमणीक भूमि में निर्मित यह आश्रम ध्यान ऊर्जा से ओतप्रोत है। 100 किलोग्राम वजन के घंटे की ध्वनि बिल्कुल अनहद नाद से मिलती जुलती है। एक बार बजाने पर एक मिनट तक गूंजती रहती है। ओशो जेतवन आश्रम

11-15 नवंबर 2022 को अष्टावक्र महागीता शिविर पोखरा नेपाल में ओशो तीर्थ आश्रम में आयोजित की गई।

इस बार नेपाल में कुल तीन अलग अलग स्थानों पर ऑफलाइन साधना शिविर, दो ऑनलाइन शिविर, आठ टीवी चैनल पर ओशो संदेश का प्रसारण, चार सत्संगों में करीब एक हजार मित्रों से मुलाकात एवं 150 से अधिक माला दीक्षा। ओशो की अमृतपूर्व अनुकंपा बरस रही है.



Interviews



15-20 Oct Self Realization Retreat
at Jabalpur, MP



First Diwali at Rajneesh Dhyhan Mandir
"Sonipat" Haryana
on 24th Oct] 2022 wali



अधिक जानकारी व संपर्क सूत्र



Osho fragrance Numbers -
9464247452, 9311806388, 9811064442,
9466661255, 9890341020, 8889709895



Youtube page - Rajneesh Fragrance



Facebook page - Rajneesh Fragrance



Instagram - Osho Fragrance



Twitter - Rajneesh Fragrance



oMeditate App -
Osho Fragrance's Mobile App+++

Keep up to date with Osho Fragrance program schedules and live events. Read the latest articles, Osho books, watch the newest videos on various topics, listen to bhajans by Ma Amrit Priya Ji, and participate in guided meditation techniques.

Ask questions to our Masters Swami Shailendra Saraswati and Ma Amrit Priya. Get automatic notifications on key events and daily quotes of Osho wisdom.

Download our official Android App on google play store by searching oMeditate or by clicking on monogram/Logo

Note: The contents are getting updated daily, please keep watching this space for more to come.



Download Osho Hindi & English Books from the link -



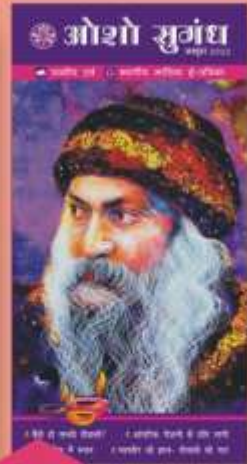
contact@oshofragrance.org

ओशो सुगंध मासिक ई-पत्रिका जो पढ़ी, देखी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें समाधि में डूबने, आनंद व भाव-विभोर से भरपूर प्रवचनों और भजनों के ऑडियो-वीडियो लिंक्स दिए गए हैं।



नियमित रूप से ई-पत्रिका प्राप्त करने हेतु, अपने मोबाइल नं. को पंजीकृत करवाने के लिए सामने दिए गए चिह्न को दबाएं।

पत्रिका को खोलने के लिए पुस्तक वाले चिह्न को दबाएं।



अभी तक के सभी अंकों के लिए चिह्न को दबाकर उन्हें देख सकते हैं।

क्या आप
ओशो सुगंधा
नियमित प्राप्त
करना चाहते हैं

यह एक जीवंत पत्रिका है
नीचे दिए गए चिह्न को
स्पर्श करने से
आपका संदेश हम तक
पहुँच जाएगा
और पत्रिकाएं नियमित रूप से
आप तक
भेजने के लिए आप का
मोबाइल न.
पंजीकृत हो जाएगा।



Osho Eternal Life Retreat



Nov 18-19-20



Masto Baba

📍 **VENUE:**

427 Amherst St. Suite 11,
Nashua NH 03063 (USA)

📞 For More info -

✉️ Anupant@hotmail.com

Anu Pant 603-508-2372

Ambika Tiwari 617-501-5380,

Urmila Khadka 603-851-0582

नवम्बर - अंक

बाल दिवस

कृपया pdf खोलिए
एवं
रचनाओं का आनन्द उठाईए

अपने साहित्य-प्रेमी
मित्रों को फारवर्ड
करना न भूलें।



ओशो सुगंध

46 नवम्बर 2022

